آيَاتُهَا ٣٠ ❀ سُوْرَةُ الْمُلْكِ (٦٧) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2 | (67) सूरतुल मुल्क / बादशाही | आयात 30

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

تَبٰرَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ ۡ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

बड़ी बरकत वाला	वह जिस	उस के हाथ में	बादशाही	और वह	पर	हर शै

قَدِيْرُ ۙ﴿١﴾ الَّذِيْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ

क़ुदरत रखने वाला	1	वह जिस	पैदा किया	मौत	और ज़िन्दगी	ताकि वह आज़माए तुम्हें	तुम में से कौन	सब से बेहतर

عَمَلًا ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ۙ﴿٢﴾ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ؕ

अमल में	और वह	ग़ालिब	बख़्शने वाला	2	जिस ने बनाए	सात आस्मान	एक के ऊपर एक

مَا تَرٰى فِيْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ ؕ فَارْجِعِ الْبَصَرَ ۙ

तू न देखेगा	में	बनाना (तख़लीक़)	रहमान (अल्लाह)	कोई फ़र्क़	फिर लौटा	निगाह

هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ﴿٣﴾ ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ

क्या तू देखता है?	कोई शिगाफ़	3	फिर	तू दोबारा लौटा	निगाह	दोबारा	वह लौट आएगी	तेरी तरफ़

الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيْرٌ ﴿٤﴾ وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا

निगाह	ख़ार हो कर	और वह	थकी मान्दा	4	और यक़ीनन हम ने आरास्ता किया	आस्माने दुनिया

بِمَصَابِيْحَ وَجَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ وَاَعْتَدْنَا لَهُمْ

चिराग़ों से	और हम ने उसे बनाया	मारने का औज़ार	शैतानों के लिए	और हम ने तैयार किया	उन के लिए

عَذَابَ السَّعِيْرِ ﴿٥﴾ وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ؕ

दहकती आग (जहन्नम) का अज़ाब	5	और उन लोगों के लिए	जिन्हों ने कुफ़्र किया	उन के रब की तरफ़ से	जहन्नम का अज़ाब

وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٦﴾ اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِيْقًا وَّهِيَ

और बुरी	लौटने की जगह	6	जब वह डाले जाएंगे	उस में	वह सुनेंगे	उस का	चीख़ना चिल्लाना	और वह

تَفُوْرُ ۙ﴿٧﴾ تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ؕ كُلَّمَآ اُلْقِيَ فِيْهَا فَوْجٌ سَاَلَهُمْ

जोश मार रही होगी	7	क़रीब है कि फट पड़े	ग़ज़ब से	जब भी	डाला जाएगा उस में	कोई गिरोह	वह उन से पूछेंगे

خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَذِيْرٌ ﴿٨﴾ قَالُوْا بَلٰى قَدْ جَآءَنَا نَذِيْرٌ ۙ فَكَذَّبْنَا

उस के दारोग़ा	क्या नहीं आया तुम्हारे पास	कोई डराने वाला	8	वह कहेंगे	हाँ	ज़रूर आया हमारे पास	डराने वाला	सो हम ने झुटलाया

وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۖ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ كَبِيْرٍ ﴿٩﴾

और हम ने कहा	नहीं नाज़िल की अल्लाह ने	कुछ	नहीं तुम	मगर (सिर्फ़)	गुमराही में	बड़ी	9

وَقَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِيْٓ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿١٠﴾

और वह कहेंगे	अगर	हम सुनते	या हम समझते	हम न होते	में	दोज़ख़ियों	10

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

बड़ी बरकत वाला है वह जिस के हाथों में है बादशाही, और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला। (1)

वह जिस ने पैदा किया मौत और ज़िन्दगी को, ताकि वह तुम्हें आज़माए कि तुम में से कौन है अमल में सब से बेहतर, और वह ग़ालिब बख़्शने वाला है। (2)

जिस ने सात आस्मान बनाए एक के ऊपर एक, तू अल्लाह की तख़्लीक़ में कोई फ़र्क़ न देखेगा, फिर निगाह लौटा कर (देख) क्या तू कोई शिगाफ़ (दराड़) देखता है। (3)

फिर दोबारा निगाह लौटा कर (देख) वह तेरी तरफ़ ख़ार हो कर थकी मान्दी लौट आएगी। (4)

और यक़ीनन हम ने आरास्ता किया आस्माने दुनिया को चिराग़ों से और हम ने उसे शैतानों के लिए मारने का औज़ार बनाया और हम ने उन के लिए जहन्नम का अज़ाब तैयार किया है। (5)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन के लिए उन के रब की तरफ़ से जहन्नम का अज़ाब है, और (यह) बुरी लौटने की जगह है। (6)

जब वह उस में डाले जाएंगे तो वह सुनेंगे उस का चीख़ना चिल्लाना और वह जोश मार रही होगी। (7)

क़रीब है कि ग़ज़ब से फट पड़े, जब भी उस में कोई गिरोह डाला जाएगा, उन से उस के दारोग़ा पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया था? (8)

वह कहेंगे: हां (क्यों नहीं) हमारे पास ज़रूर डराने वाला आया, सो हम ने झुटलाया और हम ने कहा कि अल्लाह ने कुछ नाज़िल नहीं किया, तुम सिर्फ़ बड़ी गुमराही में हो। (9)

और वह कहेंगे: अगर हम सुनते या हम समझते तो हम दोज़ख़ियों में न होते। (10)

فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْۢبِهِمْ ۚ فَسُحْقًا لِّاَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿١١﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

सो उन्हों ने एतिराफ़ कर लिया	अपने गुनाहों का	तो दूरी (लानत)	दोज़ख़ियों के लिए	11	बेशक	जो लोग

يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿١٢﴾ وَاَسِرُّوْا

डरते हैं	अपना रब	बिन देखे	उन के लिए	बख़्शिश	और अजर	बड़ा	12	और तुम छुपाओ

قَوْلَكُمْ اَوِ اجْهَرُوْا بِهٖ ۭ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿١٣﴾ اَلَا يَعْلَمُ

अपनी बात	या बुलन्द आवाज़ से कहो	उस को	बेशक वह	जानने वाला	सीनों (दिलों) के भेद	13	क्या नहीं जानेगा

ع ١٤ / ١

مَنْ خَلَقَ ۭ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿١٤﴾ ع هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ

जिस ने पैदा किया	और वह	बारीक बीन	बड़ा बाख़बर	14	वही	वह जिस ने किया	तुम्हारे लिए

الْاَرْضَ ذَلُوْلًا فَامْشُوْا فِيْ مَنَاكِبِهَا وَكُلُوْا مِنْ رِّزْقِهٖ ۭ وَاِلَيْهِ

ज़मीन	मुसख़्ख़र	ताकि तुम चलो	उस के रास्तों में	सो तुम खाओ	उस के रिज़्क़ से	और उसी की तरफ़

النُّشُوْرُ ﴿١٥﴾ ءَاَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَاۗءِ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمُ

जी उठ कर जाना	15	क्या तुम बेख़ौफ़ हो	जो	आस्मान में	कि वह धंसा दे	तुम्हें

الْاَرْضَ فَاِذَا هِيَ تَمُوْرُ ﴿١٦﴾ لا اَمْ اَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَاۗءِ اَنْ

ज़मीन	तो नागहां	वह जुम्बिश करे	16	क्या तुम बेख़ौफ़ हो	जो	आस्मान में	कि

يُّرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ۭ فَسَتَعْلَمُوْنَ كَيْفَ نَذِيْرِ ﴿١٧﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ

वह भेजे	तुम पर	पत्थरों की बारिश	सो तुम जल्द जान लोगे	कैसा	मेरा डराना	17	और पक्का झुटलाया

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿١٨﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا

वह लोग जो	से	इन से क़ब्ल	तो कैसा	हुआ	मेरा अज़ाब	18	क्या नहीं देखा उन्हों ने

وقف لازم — وقف غفران — وقف منزل

اِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صٰۗفّٰتٍ وَّيَقْبِضْنَ ڼ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا الرَّحْمٰنُ ۭ

परिन्दों को	अपने ऊपर	पर फैलाते	और सुकेड़ते	नहीं थाम सकता उन्हें	सिवा	रहमान (अल्लाह)

اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍۢ بَصِيْرٌ ﴿١٩﴾ اَمَّنْ هٰذَا الَّذِيْ هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ

बेशक वह	हर शै को	देखने वाला	19	भला कौन है वह?	जो	वह	लशकर	तुम्हारा

يَنْصُرُكُمْ مِّنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ ۭ اِنِ الْكٰفِرُوْنَ اِلَّا فِيْ غُرُوْرٍ ﴿٢٠﴾ ع

वह मदद करे तुम्हारी	से	अल्लाह के सिवा	नहीं	काफ़िर (जमा)	मगर	धोके में	20

اَمَّنْ هٰذَا الَّذِيْ يَرْزُقُكُمْ اِنْ اَمْسَكَ رِزْقَهٗ ۚ بَلْ لَّجُّوْا

भला कौन है	वह जो रिज़्क़ दे तुम्हें	अगर	वह रोक ले	अपना रिज़्क़	बल्कि जमे हुए

فِيْ عُتُوٍّ وَّنُفُوْرٍ ﴿٢١﴾ اَفَمَنْ يَّمْشِيْ مُكِبًّا عَلٰي وَجْهِهٖٓ

सरकशी	और भागते हैं	21	पस क्या जो	वह चलता है	गिरता हुआ	अपने मुँह के बल

اَهْدٰٓى اَمَّنْ يَّمْشِيْ سَوِيًّا عَلٰي صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٢﴾

ज़ियादा हिदायत याफ़्ता	या वह जो	चलता है	बराबर (सीधा)	पर	सीधा रास्ता	22

सो उन्हों ने अपने गुनाहों का एतिराफ़ कर लिया, पस लानत है दोज़ख़ियों के लिए। (11)

बेशक जो लोग बिन देखे अपने रब से डरते हैं उन के लिए बख़्शिश और बड़ा अजर है। (12)

और तुम अपनी बात छुपाओ या उस को बुलन्द आवाज़ से कहो, वह बेशक जानने वाला है दिलों के भेद को। (13)

क्या जिस ने पैदा किया वही न जानेगा? और वह बारीक बीन बड़ा बाख़बर है। (14)

वही है जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को किया मुसख़्ख़र ताकि तुम उस के रास्तों में चलो और उस के रिज़्क़ में से खाओ, और उसी की तरफ़ जी उठ कर जाना है। (15)

क्या तुम (उस से) बेख़ौफ़ हो? जो आस्मान में है कि वह तुम्हें ज़मीन में धंसा दे तो नागहां वह हिलने लगे। (16)

क्या तुम (उस से) बेख़ौफ़ हो जो आस्मानों में है कि वह तुम पर पत्थरों की बारिश भेज दे? सो तुम जल्द जान लोगे कि मेरा डराना कैसा है? (17)

और ज़रूर उन लोगों ने झुटलाया जो इन से पहले थे तो (याद करो) कैसा हुआ मेरा अज़ाब! (18)

क्या उन्हों ने अपने ऊपर परिन्दों को पर फैलाते और सुकेड़ते नहीं देखा, उन्हें (कोई) नहीं थाम सकता अल्लाह के सिवा, बेशक वह हर चीज़ का देखने वाला। (19)

भला तुम्हारा वह कौन सा लशकर है जो तुम्हारी मदद करे अल्लाह के सिवा, काफ़िर नहीं मगर (महज़) धोके में हैं। (20)

भला कौन है वह जो तुम्हें रिज़्क़ दे अगर वह अपना रिज़्क़ रोकले? बल्कि वह सरकशी और फ़रार में ढीट बने हुए हैं। (21)

पस जो शख़्स अपने मुँह के बल गिरता हुआ (औन्धा) चलता है ज़ियादा हिदायत याफ़्ता है या वह जो सीधे रास्ते पर सीधा चलता है? (22)

قُلْ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ

फ़रमा दें वही	वह जिस ने पैदा किया तुम्हें	और उस ने बनाए	तुम्हारे लिए	कान	और आँखें

وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٣﴾ قُلْ هُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ

और दिल (जमा)	बहुत कम	जो तुम शुक्र करते हो	23	फ़रमा दें	वही	वह जिस ने फैलाया तुम्हें

فِي الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ

ज़मीन में	और उसी की तरफ़	तुम उठाए जाओगे	24	और वह कहते हैं	कब	यह वादा

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٥﴾ قُلْ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۪ وَاِنَّمَآ اَنَا

अगर	तुम हो	सच्चे	25	फ़रमा दें	इस के सिवा नहीं कि इल्म	अल्लाह के पास	और इस के सिवा नहीं	मैं

نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٦﴾ فَلَمَّا رَاَوْهُ زُلْفَةً سِيْٓـَٔتْ وُجُوْهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

डराने वाला	साफ़ साफ़	26	फिर जब	वह उसे देखेंगे	नज़्दीक आता	बुरे (सियाह) हो जाएंगे चेहरे	जिन्हों ने कुफ़्र किया

وَقِيْلَ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُوْنَ ﴿٢٧﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ

और कहा जाएगा	यह	वह जो	तुम थे	उस को	तुम मांगते	27	फ़रमा दें	किया तुम ने देखा

اِنْ اَهْلَكَنِيَ اللّٰهُ وَمَنْ مَّعِيَ اَوْ رَحِمَنَا ۙ فَمَنْ يُّجِيْرُ الْكٰفِرِيْنَ

अगर	मुझे हलाक कर दे अल्लाह	और जो	मेरे साथ	या वह रहम फ़रमाए हम पर	तो कौन	पनाह देगा	काफ़िरों

مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٨﴾ قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَعَلَيْهِ

से	दर्दनाक अ़ज़ाब	28	फ़रमा दें	वही रहमान	हम ईमान लाए	उस पर	और उसी पर

تَوَكَّلْنَا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٩﴾ قُلْ

हम ने भरोसा किया	सो तुम जल्द जान लोगे	कौन वह	में	खुली गुमराही	29	फ़रमा दें

ع ١٦ ٢ ٢ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَّاْتِيْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِيْنٍ ﴿٣٠﴾

क्या तुम ने देखा (भला देखो)	अगर हो जाए	तुम्हारा पानी	नीचे उतरा हुआ	तो कौन	ले आएगा तुम्हारे पास	रवां पानी	30

آياتُها ٥٢ ❀ (٦٨) سُوْرَةُ الْقَلَمِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

आयात 52 | (68) सूरतुल क़लम | रुकूआत 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ﴿١﴾ مَآ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ

नून क़सम है क़लम की	और जो	वह लिखते हैं	1	नहीं आप (स)	नेमत (फ़ज़्ल) से	अपना रब

بِمَجْنُوْنٍ ﴿٢﴾ وَاِنَّ لَكَ لَاَجْرًا غَيْرَ مَمْنُوْنٍ ﴿٣﴾ وَاِنَّكَ لَعَلٰى

मजनून	2	और बेशक आप के लिए	अलबत्ता अजर	ख़तम न होने वाला	3	और बेशक आप (स)	यक़ीनन-पर

خُلُقٍ عَظِيْمٍ ﴿٤﴾ فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُوْنَ ﴿٥﴾ بِاَيِّكُمُ الْمَفْتُوْنُ ﴿٦﴾

अख़्लाक़ का ऊंचा मुक़ाम	4	आप (स) जल्द देख लेंगे	और वह भी देख लेंगे	5	तुम में से कौन?	दीवाना	6

आप (स) फ़रमा दें: वही है जिस ने तुम्हें पैदा किया और उस ने बनाए तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल, तुम बहुत कम शुक्र करते हो। (23)
आप (स) फ़रमा दें: वही है जिस ने तुम्हें ज़मीन में फैलाया और उसी की तरफ़ तुम उठाए जाओगे। (24)
और वह कहते हैं कि यह वादा कब (पूरा होगा?) अगर तुम सच्चे हो। (25)
आप (स) फ़रमा दें: इस के सिवा नहीं कि इल्म अल्लाह के पास है, और इस के सिवा नहीं कि मैं साफ़ साफ़ डराने वाला हूँ। (26)
फिर जब वह उसे नज़्दीक आता देखेंगे तो उन लोगों के चेहरे सियाह हो जाएंगे जिन्हों ने कुफ़्र किया और कहा जाएगा कि यह है वह जो तुम मांगते थे। (27)
आप (स) फ़रमा दें: भला देखो तो अगर अल्लाह हलाक कर दे मुझे और (उन्हें) जो मेरे साथ हैं या हम पर रहम फ़रमाए तो काफ़िरों को दर्दनाक अ़ज़ाब से कौन बचाएगा? (28)
आप (स) फ़रमा दें: वही रहमान है, हम ईमान लाए उस पर और उसी पर हम ने भरोसा किया, सो तुम जल्द जान लोगे कि कौन खुली गुमराही में है? (29)
आप (स) फ़रमा दें: भला देखो तो अगर हो जाए तुम्हारा पानी नीचे को उतरा हुआ (ख़ुश्क) तो कौन ले आएगा तुम्हारे पास (सूत का) रवां पानी? (30)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
नून। क़सम है क़लम की और जो वह लिखते हैं। (1)
आप (स) अपने रब के फ़ज़्ल से मजनून नहीं हैं। (2)
और बेशक आप (स) के लिए अजर है ख़तम न होने वाला। (3)
और बेशक आप (स) अख़्लाक़ के ऊंचे मुक़ाम पर हैं। (4)
पस आप (स) जल्द देख लेंगे और वह भी देख लेंगे (5)
(कि) तुम में से कौन दीवाना है? (6)

بेशक आप (स) का रब उस को खूब जानता है जो गुमराह हुआ उस की राह से और वह खूब जानता है हिदायत याफ़्ता लोगों को। (7)
पस आप (स) झुटलाने वालों का कहा न मानें। (8)
वह चाहते हैं कि काश आप (स) नर्मी करें तो वह (भी) नर्मी करें। (9)
और आप (स) बेवक़ूअत बात बात पर क़समें खाने वाले का कहा न मानें। (10)
ऐब निकालने वाला चुग़लियां लगाते फिरने वाला। (11)
माल में बुख़्ल करने वाला, हद से बढ़ने वाला गुनाहगार। (12)
सख़्त खू, उस के बाद बद असल। (13)
इस लिए कि वह माल वाला और औलाद वाला है। (14)
जब उसे हमारी आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो वह कहता है: यह अगले लोगों की कहानियां है। (15)
हम जल्द दाग़ देंगे उस की नाक पर। (16)
बेशक हम ने उन्हें आज़माया जैसे हम ने आज़माया था बाग़ वालों को, जब उन्हों ने क़सम खाई कि हम सुब्ह होते उस का फल ज़रूर तोड़ लेंगे। (17)
और उन्हों ने "इन्शा अल्लाह" न कहा। (18)
पस उस (बाग़) पर तेरे रब की तरफ़ से एक अ़ज़ाब फिर गया और वह सोए हुए थे। (19)
तो वह (बाग़) सुब्ह को रह गया जैसे एक कटा हुआ खेत। (20)
तो वह सुब्ह होते एक दूसरे को पुकारने लगे। (21)
कि सुब्ह सवेरे अपने खेत पर चलो अगर तुम काटने वाले हो (अगर तुम्हें खेती काटनी है)। (22)
फिर वह चले और वह आपस में चुपके चुपके कहते थे। (23)
कि आज वहां तुम पर कोई मिस्कीन दाख़िल न होने पाए। (24)
और वह सुब्ह सवेरे चले (इस ज़अ़म के साथ) कि वह बख़ीली पर क़ादिर हैं। (25)
फिर जब उन्हों ने उसे देखा तो वह बोले कि बेशक हम राह भूल गए हैं। (26)
बल्कि हम महरूम (बद नसीब) हो गए हैं। (27)
कहा उन के बेहतरीन आदमी ने: क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि तुम तस्बीह क्यों नहीं करते? (28)
वह बोले: पाक है हमारा रब, बेशक हम ज़ालिम थे। (29)
पस एक दूसरे को अपनाया बाज़ पर बाज़ मलामत करते हुए। (30)
वह बोले हाए हमारी ख़राबी! बेशक हम (ही) सरकश थे। (31)

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ

और वह खूब जानता है	उस की राह से	वह गुमराह हुआ	उस को जो	वह खूब जानता है	बेशक आप (स) का रब

بِالْمُهْتَدِينَ ﴿٧﴾ فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِينَ ﴿٨﴾ وَدُّوا لَوْ تُدْهِنُ

काश आप नर्मी करें	वह चाहते हैं	8	झुटलाने वालों	पस आप (स) कहा न मानें	7	हिदायत याफ़्ता लोगों को

فَيُدْهِنُونَ ﴿٩﴾ وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَهِينٍ ﴿١٠﴾ هَمَّازٍ مَشَّاءٍ

फिरने वाला	ऐब निकालने वाला	10	बे वक़ूअ़त	बात बात पर क़समें खाने वाला	और आप (स) कहा न मानें	9	तो वह भी नर्मी करें

بِنَمِيمٍ ﴿١١﴾ مَنَّاعٍ لِلْخَيْرِ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ﴿١٢﴾ عُتُلٍّ بَعْدَ ذَٰلِكَ زَنِيمٍ ﴿١٣﴾

13	उस के बाद बद असल	सख़्त खू	12	गुनाहगार	हद से बढ़ने वाला	माल में	रोकने (बुख़्ल करने) वाला	11	चुग़्ली लिए

أَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَبَنِينَ ﴿١٤﴾ إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا قَالَ

वह कहता है	हमारी आयतें	पढ़ कर सुनाई जाती हैं उसे	जब	14	और औलाद वाला	माल वाला	इस लिए कि वह है

أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٥﴾ سَنَسِمُهُ عَلَى الْخُرْطُومِ ﴿١٦﴾ إِنَّا بَلَوْنَاهُمْ كَمَا

जैसे	बेशक हम ने आज़माया उन्हें	16	सून्ड (नाक) पर	हम जल्द दाग़ देंगे उस को	15	अगले लोग	कहानियां

بَلَوْنَا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ إِذْ أَقْسَمُوا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِينَ ﴿١٧﴾

17	सुबह होते	हम ज़रूर तोड़ लेंगे उस का फल	जब उन्हों ने क़सम खाई	बाग़ वालों को		हम ने आज़माया

وَلَا يَسْتَثْنُونَ ﴿١٨﴾ فَطَافَ عَلَيْهَا طَائِفٌ مِنْ رَبِّكَ وَهُمْ نَائِمُونَ ﴿١٩﴾

19	सोए हुए थे	और वह	तेरे रब की तरफ़ से	एक फिरने वाला (अ़ज़ाब)	उस पर	पस फिर गया	18	और उन्हों ने इन्शा अल्लाह न कहा

فَأَصْبَحَتْ كَالصَّرِيمِ ﴿٢٠﴾ فَتَنَادَوْا مُصْبِحِينَ ﴿٢١﴾ أَنِ اغْدُوا عَلَىٰ

पर	सुबह सवेरे चलो	21	सुबह होते	तो एक दूसरे को पुकारने लगे	20	जैसे कटा हुआ खेत	तो वह सुबह को रह गया

حَرْثِكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَارِمِينَ ﴿٢٢﴾ فَانْطَلَقُوا وَهُمْ يَتَخَافَتُونَ ﴿٢٣﴾

23	आपस में चुपके चुपके कहते थे	और वह	फिर वह चले	22	काटने वाले	अगर तुम हो	अपने खेत

أَنْ لَا يَدْخُلَنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مِسْكِينٌ ﴿٢٤﴾ وَغَدَوْا عَلَىٰ حَرْدٍ

बख़ीली पर	और वह सुबह सवेरे चले	24	कोई मिस्कीन	तुम पर	आज	वहां दाख़िल न होने पाए	कि

قَادِرِينَ ﴿٢٥﴾ فَلَمَّا رَأَوْهَا قَالُوا إِنَّا لَضَالُّونَ ﴿٢٦﴾ بَلْ نَحْنُ

बल्कि हम	26	बेशक हम राह भूल गए हैं	वह बोले	उन्हों ने उसे देखा	फिर जब	25	वह क़ादिर हैं

مَحْرُومُونَ ﴿٢٧﴾ قَالَ أَوْسَطُهُمْ أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُونَ ﴿٢٨﴾

28	तुम तस्बीह क्यों नहीं करते	तुम से	क्या मैं ने नहीं कहा था	उन का सब से अच्छा	कहा	27	महरूम हो गए हैं

قَالُوا سُبْحَانَ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٢٩﴾ فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ

उन का बाज़ (एक)	पस अपनाया	29	ज़ालिम (जमा)	बेशक हम थे	हमारा रब	पाक है	वह बोले

عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَلَاوَمُونَ ﴿٣٠﴾ قَالُوا يَا وَيْلَنَا إِنَّا كُنَّا طَاغِينَ ﴿٣١﴾

31	सरकश (जमा)	बेशक हम थे	हाए हमारी ख़राबी	वह बोले	30	एक दूसरे को मलामत करते हुए	बाज़ (दूसरे) पर

عَسٰى رَبُّنَآ اَنْ يُّبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَآ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ ﴿٣٢﴾

32	राग़िब (रुजूअ़ करने वाले)	अपने रब की तरफ़	बेशक हम	इस से	बेहतर	हमें बदले में दे	कि	हमारा रब	उम्मीद है

وقف لازم

كَذٰلِكَ الْعَذَابُ ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ

काश!	सब से बड़ा	अलबत्ता आख़िरत का अ़ज़ाब	अ़ज़ाब	यूँ होता है

ع ٣٤ ٣

كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٣﴾ اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٣٤﴾

34	नेमतों के बाग़ात	उन के रब के पास	परहेज़गारों के लिए	बेशक	33	वह जानते होते

اَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِيْنَ كَالْمُجْرِمِيْنَ ﴿٣٥﴾ مَا لَكُمْ ۫ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٦﴾

36	तुम फ़ैसला करते हो	कैसा	क्या हुआ तुम्हें	35	मुज्रिमों की तरह	मुसलमानों	तो क्या हम करदेंगे

اَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِيْهِ تَدْرُسُوْنَ ﴿٣٧﴾ اِنَّ لَكُمْ فِيْهِ لَمَا تَخَيَّرُوْنَ ﴿٣٨﴾

38	अलबत्ता जो तुम पसंद करते हो	उस में	तुम्हारे लिए	बेशक	37	तुम पढ़ते हो	उस में	कोई किताब	क्या तुम्हारे पास

اَمْ لَكُمْ اَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۙ اِنَّ لَكُمْ

तुम्हारे लिए	बेशक	क़ियामत के दिन	तक	पहुँचने वाला	हम पर (हमारे ज़िम्मे)	कोई पुख़्ता अ़हद	क्या तुम्हारे लिए

ع ١٥ عند المتقدمين ١٢

لَمَا تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٩﴾ سَلْهُمْ اَيُّهُمْ بِذٰلِكَ زَعِيْمٌ ﴿٤٠﴾ اَمْ لَهُمْ شُرَكَآءُ

शरीक (जमा)	या उन के	40	ज़ामिन (ज़िम्मेदार)	इस का	उन में से कौन	तू उन से पूछ	39	तुम फ़ैसला करते हो	अलबत्ता जो

فَلْيَاْتُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ﴿٤١﴾ يَوْمَ يُكْشَفُ

खोल दिया जाएगा	जिस दिन	41	सच्चे	वह हैं	अगर	अपने शरीकों	तो चाहिए कि वह लाएं

عَنْ سَاقٍ وَّيُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٤٢﴾

42	तो वह न कर सकेंगे	सिज्दों के लिए	और वह बुलाए जाएंगे	पिंडली	से

خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ وَقَدْ كَانُوْا يُدْعَوْنَ

बुलाए जाते थे	और तहक़ीक़	ज़िल्लत	उन पर छाई हुई	उन की आँखें	झुकी हुई

اِلَى السُّجُوْدِ وَهُمْ سٰلِمُوْنَ ﴿٤٣﴾ فَذَرْنِيْ وَمَنْ يُّكَذِّبُ

और वह जो झुटलाता है	पस मुझे छोड़ दो तुम	43	सही सालिम (जमा)	जब कि वह	सिज्दे के लिए

بِهٰذَا الْحَدِيْثِ ؕ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَاُمْلِيْ

और मैं ढील देता हूँ	44	वह जानते न होंगे	इस तरह	जल्द हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता खींचेंगे	इस बात को

لَهُمْ ؕ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ﴿٤٥﴾ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ

तावान	से	कि वह	कोई अजर	क्या आप (स) मांगते हैं उन से	45	बड़ी क़वी	मेरी ख़ुफ़िया तदबीर	बेशक	उन को

مُّثْقَلُوْنَ ﴿٤٦﴾ اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿٤٧﴾ فَاصْبِرْ

पस आप (स) सब्र करें	47	लिख लेते हैं	कि वह	इल्मे ग़ैब	उन के पास	या	46	बोझल (दबे जाते) हैं

وقف لازم

لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوْتِ ۘ اِذْ نَادٰى وَهُوَ مَكْظُوْمٌ ﴿٤٨﴾

48	ग़म से भरा हुआ	और वह	जब उस ने पुकारा	मछली वाले (यूनुस अ) की तरह	और न हों आप (स)	अपना रब	हुक्म के लिए

उम्मीद है कि हमारा रब हमें इस
से बेहतर बदले में दे, बेशक हम
अपने रब की तरफ़ रुजूअ़ करने
वाले हैं। (32)
यूँ होता है अ़ज़ाब! और आख़िरत
का अ़ज़ाब अलबत्ता सब से बड़ा
है। काश! वह जानते होते। (33)
बेशक परहेज़गारों के लिए उन के
रब के हां नेमतों के बाग़ात हैं। (34)
तो क्या हम कर देंगे मुसलमानों को
मुज्रिमों की तरह (महरूम)? (35)
तुम्हें क्या हुआ? तुम कैसा फ़ैसला
करते हो? (36)
क्या तुम्हारे पास कोई (आस्मानी) किताब
है कि उस में से तुम पढ़ते हो। (37)
कि बेशक उस में तुम्हारे लिए (होगा)
जो तुम पसंद करते हो। (38)
क्या तुम्हारे लिए हमारे ज़िम्मे कोई
पुख़्ता अ़हद है क़ियामत के दिन
तक कि बेशक तुम्हारे लिए (होगा)
जो तुम फ़ैसला करो। (39)
तू उन से पूछ कि उन में से कौन
इस का ज़ामिन है? (40)
या उन के शरीक हैं (जिन्हों ने इस
का ज़िम्मा लिया है)? तो चाहिए कि
वह अपने शरीकों को लाएं अगर
वह सच्चे हैं। (41)
जिस दिन पिंडली से खोल दिया जाएगा
और वह सिज्दों के लिए बुलाए
जाएंगे तो वह न कर सकेंगे। (42)
उन की आँखें झुकी हुई (होंगी) और
उन पर ज़िल्लत छाई हुई होगी, और
इस से क़ब्ल वह सिज्दों के लिए
बुलाए जाते थे जब कि (सही) सालम
थे (और वह इन्कार करते थे)। (43)
पस जो इस बात को झुटलाता है
तुम उस को मुझ पर छोड़ दो।
हम जल्द उन्हें इस तरह आहिस्ता
आहिस्ता खींचेंगे कि वह जानते न
होंगे। (44)
और मैं उन्हें ढील देता हूँ, बेशक मेरी
ख़ुफ़िया तदबीर बड़ी क़वी है। (45)
क्या आप (स) उन से कोई अजर
मांगते हैं? कि वह (उस) तावान
(के बोझ) से दबे जाते हैं। (46)
या उन के पास इल्मे ग़ैब है? कि
वह लिख लेते हैं। (47)
पस आप (स) अपने रब के हुक्म के
लिए सब्र करें और आप (स) यूनुस (अ)
की तरह न हो जाएं, जब उस ने
(अल्लाह तआ़ला को) पुकारा और
वह ग़म से भरा हुआ था। (48)

لَوْلَآ اَنْ تَدٰرَكَهٗ نِعْمَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ لَنُبِذَ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ مَذْمُوْمٌ ﴿٤٩﴾

49	मलामत ज़दा (अब्तर हाल)	और वह	अलबत्ता वह डाला जाता चटियल मैदान में	उस के रब का	नेमत	अगर न उस को पाया (संभाला) होता

فَاجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَجَعَلَهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٥٠﴾ وَاِنْ يَّكَادُ

और तहक़ीक़ क़रीब है	50	नेकोकारों से	पस उस को कर लिया	उस का रब	पस उस को बरगुज़ीदा किया

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ بِاَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُوْلُوْنَ

और वह कहते हैं	(किताब) नसीहत	वह सुनते हैं	जब	अपनी निगाहों से	कि वह आप (स) को फुसला देंगे	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٥١﴾ وَمَا هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٥٢﴾ ع ١٩ ٢ وقف لازم

52	तमाम जहानों के लिए	नसीहत	मगर	हालांकि यह नहीं	51	दीवाना अलबत्ता	बेशक यह

آيَاتُهَا ٥٢ ❀ (٦٩) سُوْرَةُ الْحَاقَّةِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2 — (69) सूरतुल हाक़्क़ा ज़रूर होने वाली (क़ियामत) — आयात 52

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَلْحَآقَّةُ ﴿١﴾ مَا الْحَآقَّةُ ﴿٢﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْحَآقَّةُ ﴿٣﴾

3	क्या है क़ियामत?	तुम समझे	और क्या	2	क्या है क़ियामत?	1	सचमुच होने वाली (क़ियामत)

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ وَعَادٌ ۢ بِالْقَارِعَةِ ﴿٤﴾ فَاَمَّا ثَمُوْدُ فَاُهْلِكُوْا

वह हलाक किए गए	समूद	पस जो	4	खड़खड़ाने वाली को	और आद	समूद	झुटलाया

بِالطَّاغِيَةِ ﴿٥﴾ وَاَمَّا عَادٌ فَاُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ﴿٦﴾

6	हद से ज़ियादा बढ़ी हुई	तुन्द ओ तेज़	हवा से	तो वह हलाक किए गए	आद	और जो	5	बड़ी ज़ोर की आवाज़ से

سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّثَمٰنِيَةَ اَيَّامٍ ۙ حُسُوْمًا

लगातार	दिन	और आठ	सात रात	उन पर	उस ने उस को मुसख़्ख़र किया

فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى ۙ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ﴿٧﴾

7	खोखले	खजूर	तने	गोया वह	उस में गिरी हुई	फिर तू देखता उस क़ौम को

فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْۢ بَاقِيَةٍ ﴿٨﴾ وَجَآءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهٗ

और उस के पहले लोग	फ़िरऔन	और आया	8	कोई बक़िया	उन का	तो क्या तू देखता है

وَالْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ ﴿٩﴾ فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ

अपने रब के रसूल की	सो उन्हों ने नाफ़रमानी की	9	ख़ताओं के साथ	और उलटी हुई बस्तियों वाले

فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً رَّابِيَةً ﴿١٠﴾ اِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ

हम ने तुम्हें सवार किया	पानी	तुग़्यानी पर आया	बेशक जब	10	सख़्त	गिरिफ़्त	तो उन्हें पकड़ा

فِي الْجَارِيَةِ ﴿١١﴾ لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَّتَعِيَهَآ اُذُنٌ وَّاعِيَةٌ ﴿١٢﴾

12	याद रखने वाला	कान	और उसे याद रखे	यादगार	तुम्हारे लिए	ताकि हम उस को बनाएं	11	कश्ती में

अगर उस के रब की नेमत ने उस को न संभाला होता तो अलबत्ता वह चटियल मैदान में बदहाल डाला जाता और उस का हाल अब्तर रहता। (49) पस उस के रब ने उसे बरगुज़ीदा किया तो उसे नेकोकारों में से कर लिया। (50) और तहक़ीक़ क़रीब है (ऐसा लगता है) के काफ़िर आप (स) को फुसला देंगे अपनी निगाहों से जब वह किताबे नसीहत को सुनते हैं और वह कहते हैं कि बेशक यह दीवाना है। (51) हालांकि यह नहीं, मगर तमाम जहानों के लिए (सिर्फ़ और सिर्फ़) नसीहत। (52)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

सचमुच होने वाली क़ियामत! (1) क्या है क़ियामत? (2) और तुम क्या समझे कि क्या है क़ियामत? (3) समूद और आद ने खड़खड़ाने वाली (क़ियामत) को झुटलाया। (4) पस जो समूद (थे) वह बड़ी ज़ोर दार आवाज़ से हलाक किए गए। (5) और जो आद (थे) तो वह हलाक किए गए हवा से तुन्द ओ तेज़ हद से ज़ियादा बढ़ी हुई। (6) उस (अल्लाह) ने उस (आन्धी) को उन पर लगातार सात रात और आठ दिन मुसल्लत कर दिया। पस तू उस क़ौम को उस में (यूँ) गिरी हुई देखता गोया कि वह खजूर के खोखले तने हैं। (7) तो क्या तू उन का कोई बक़िया देखता है? (8) और फ़िरऔन आया और उस से पहले के लोग और उलटी हुई बस्तियों वाले ख़ताओं के साथ। (9) सो उन्हों ने अपने रब के रसूल (अ) की नाफ़रमानी की तो उन्हें सख़्त गिरिफ़्त ने आ पकड़ा। (10) बेशक जब पानी तुग़्यानी पर आया हम ने तुम्हें कश्ती में सवार किया, (11) ताकि हम उसे तुम्हारे लिए यादगार बनाएं और याद रखने वाला कान उसे याद रखे। (12)

فَاِذَا نُفِخَ فِى الصُّوْرِ نَفْخَةٌ وَّاحِدَةٌ ۙ﴿١٣﴾ وَّحُمِلَتِ الْاَرْضُ

ज़मीन	और उठाई जाएगी	13	यकबारगी	फूंक	सूर में	पस जब फूंकी जाएगी

وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً ۙ﴿١٤﴾ فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۙ﴿١٥﴾

15	वह होने वाली	हो पड़ेगी	पस उस दिन	14	यकबारगी	रेज़ा रेज़ा	पस रेज़ा रेज़ा कर दिए जाएंगे	और पहाड़

وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِىَ يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ ۙ﴿١٦﴾ وَّالْمَلَكُ عَلٰٓى اَرْجَآئِهَا ؕ

उस के किनारों	पर	और फ़रिश्ते	16	बिलकुल कमज़ोर	उस दिन	पस वह	आस्मान	और फट जाएगा

وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ ؕ﴿١٧﴾ يَوْمَئِذٍ

जिस दिन	17	आठ	उस दिन	अपने ऊपर	तुम्हारे रब का अर्श	और वह उठाएंगे

تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ﴿١٨﴾ فَاَمَّا مَنْ اُوْتِىَ

दिया गया	पस जिस को	18	(कोई चीज़) पोशीदा	तुम से (तुम्हारी)	न पोशीदा रहेगी	तुम पेश किए जाओगे

كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَيَقُوْلُ هَآؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِيَهْ ﴿١٩﴾ اِنِّىْ ظَنَنْتُ

मैं बेशक समझता था	19	मेरा आमाल नामा	लो पढ़ो	तो वह कहेगा	उस के दाएं हाथ में	उस की किताब (आमाल नामा)

اَنِّىْ مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ ﴿٢٠﴾ فَهُوَ فِىْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۙ﴿٢١﴾

21	पसंदीदा ज़िन्दगी	में	पस वह	20	अपने हिसाब से	कि मैं मिलूँगा

فِىْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۙ﴿٢٢﴾ قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ ﴿٢٣﴾ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا

और तुम पियो	तुम खाओ	23	क़रीब	जिस के मेवे	22	बहिश्ते बरीं	में

هَنِيْٓـئًا ۢبِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِى الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ ﴿٢٤﴾ وَاَمَّا مَنْ

जो-जिस	और रहा	24	गुज़रे हुए अय्याम	में	उस के बदले जो तुम ने भेजा	मज़े से

اُوْتِىَ كِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ ۙ فَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِىْ لَمْ اُوْتَ كِتٰبِيَهْ ﴿٢٥﴾

25	मेरा आमाल नामा	मुझे न दिया जाता	ऐ काश	तो वह कहेगा	उस के बाएं हाथ में	उस का आमाल नामा दिया गया

وَلَمْ اَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ﴿٢٦﴾ يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ﴿٢٧﴾

27	क़िस्सा चुका देने वाली	(मौत) होती	ऐ काश	26	क्या है मेरा हिसाब	और मैं न जानता

مَآ اَغْنٰى عَنِّىْ مَالِيَهْ ﴿٢٨﴾ هَلَكَ عَنِّىْ سُلْطٰنِيَهْ ﴿٢٩﴾ خُذُوْهُ

तुम उस को पकड़ो	29	मेरी बादशाही	मुझ से	जाती रही	28	मेरा माल	मेरे	काम न आया

فَغُلُّوْهُ ۙ﴿٣٠﴾ ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ ۙ﴿٣١﴾ ثُمَّ فِىْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا

जिस की पैमाइश	एक ज़न्जीर में	फिर	31	उसे डाल दो	जहन्नम	फिर	30	पस उसे तौक़ पहनाओ

سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ ؕ﴿٣٢﴾ اِنَّهٗ كَانَ لَا يُؤْمِنُ

ईमान नहीं लाता था	बेशक वह	32	पस तुम उस को जकड़ दो	हाथ	सत्तर (70)

بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ ۙ﴿٣٣﴾ وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ؕ﴿٣٤﴾

34	मोहताज	खिलाना	पर	और वह रग़बत न दिलाता था	33	बुज़ुर्ग ओ बरतर	अल्लाह पर

पस जब फूंकी जाएगी सूर में यकबारगी फूंक। (13)
और उठाए जाएंगे ज़मीन और पहाड़, पस वह यकबारगी रेज़ा रेज़ा कर दिए जाएंगे। (14)
पस उस दिन वह होने वाली हो पड़ेगी, (15)
और आस्मान फट जाएगा, पस वह उस दिन बिलकुल कमज़ोर होगा। (16)
और फ़रिश्ते (होंगे) उस के किनारों पर, और आठ फ़रिश्ते तुम्हारे रब का अर्श उठाए हुए होंगे। (17)
जिस दिन तुम पेश किए जाओगे तुम्हारी कोई चीज़ पोशीदा न रहेगी। (18)
पस जिस को उस का आमाल नामा उस के दाएं हाथ में दिया जाएगा वह (दूसरों को) कहेगाः लो पढ़ो मेरा आमाल नामा। (19)
बेशक मैं यक़ीन रखता था कि मैं अपने हिसाब से मिलूँगा। (20)
पस वह पसंदीदा ज़िन्दगी में होगा, (21)
आली मुक़ाम जन्नत में, (22)
जिस के मेवे क़रीब (झुके हुए) हैं। (23)
तुम मज़े से खाओ पियो उस के बदले जो तुम ने (दुनिया के) गुज़रे हुए दिनों में भेजा है। (24)
और रहा वह जिस को उस का आमाल नामा उस के बाएं हाथ में दिया गया तो वह कहेगा ऐ काश! मुझे न दिया जाता मेरा आमाल नामा, (25)
और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है? (26)
ऐ काश! मौत ही क़िस्सा चुका देने वाली होती। (27)
मेरा माल मेरे काम न आया। (28)
मेरी बादशाही मुझ से जाती रही। (29)
(फ़रिश्तों को हुक्म होगा) तुम उस को पकड़ो, उसे तौक़ पहनाओ, (30)
फिर उसे जहन्नम में डाल दो। (31)
फिर एक ज़न्जीर में जिस की पैमाइश सत्तर (70) हाथ है, पस तुम उस को जकड़ दो। (32)
बेशक वह अल्लाह बुज़ुर्ग ओ बरतर पर ईमान नहीं लाता था। (33)
और वह (दूसरों को भी) रग़बत न दिलाता था मिस्कीन को खिलाने की। (34)

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هٰهُنَا حَمِيْمٌ ﴿٣٥﴾ وَّلَا طَعَامٌ اِلَّا مِنْ

से	मगर-सिवा	और न खाना	35	कोई दोस्त	यहां	आज	पस नहीं उस का

غِسْلِيْنٍ ﴿٣٦﴾ لَّا يَاْكُلُهٗٓ اِلَّا الْخٰطِـُٔوْنَ ﴿٣٧﴾ فَلَآ اُقْسِمُ ع ١ ٣٧ ٥

पस मैं क़सम खाता हूँ	37	ख़ताकारों	सिवा	उसे न खाएगा	36	पीप

بِمَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَمَا لَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٣٩﴾ اِنَّهٗ لَقَوْلُ

अलबत्ता कलाम	बेशक यह	39	तुम नहीं देखते	और जो	38	उस की जो तुम देखते हो

رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ﴿٤٠﴾ وَّمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ ۭ قَلِيْلًا مَّا تُؤْمِنُوْنَ ﴿٤١﴾

41	तुम ईमान लाते हो	बहुत कम	किसी शायर का कलाम	और यह नहीं	40	रसूले करीम

وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٢﴾ تَنْزِيْلٌ مِّنْ

से	उतारा हुआ	42	तुम नसीहत पकड़ते हो	बहुत कम	किसी काहिन का	और न क़ौल है

رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٣﴾ وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ ﴿٤٤﴾

44	बातें (अक़वाल)	कुछ	हम पर	बना कर लाता	और अगर	43	तमाम जहानों का रब

لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ﴿٤٥﴾ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ ﴿٤٦﴾ فَمَا

सो नहीं	46	रगे (गर्दन)	उस की	हम अलबत्ता काट देते	फिर	45	दायां हाथ	उस का	तो यक़ीनन हम पकड़ लेते

مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ عَنْهُ حٰجِزِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَاِنَّهٗ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٨﴾

48	परहेज़गारों के लिए	अलबत्ता एक नसीहत	और बेशक यह	47	रोकने वाला	उस से	कोई भी	तुम में से

وَاِنَّا لَنَعْلَمُ اَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِيْنَ ﴿٤٩﴾ وَاِنَّهٗ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٠﴾

50	काफ़िरों पर	हसरत	और बेशक यह	49	झुटलाने वाले	तुम में से	कि	अलबत्ता जानते हैं	और बेशक हम

وَاِنَّهٗ لَحَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿٥١﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٥٢﴾ ع ٢ ١٥ ٦

52	अ़ज़मत वाला	अपना रब	नाम के साथ	पस पाकीज़गी बयान करो	51	यक़ीनी हक़	और बेशक यह

آيَاتُهَا ٤٤ ❀ (٧٠) سُوْرَةُ الْمَعَارِجِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकुआ़त 2 — (70) सूरतुल मआ़रिज ऊपर चढ़ने की सीढ़ियाँ — आयात 44

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

سَاَلَ سَاۗىِٕلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ﴿١﴾ لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ لَهٗ

नहीं उसे	काफ़िरों के लिए	1	अ़ज़ाब वाक़े होने वाला	एक मांगने वाला	मांगा

دَافِعٌ ﴿٢﴾ مِّنَ اللّٰهِ ذِي الْمَعَارِجِ ﴿٣﴾ تَعْرُجُ الْمَلٰۗىِٕكَةُ

फ़रिश्ते	चढ़ते हैं	3	सीढ़ियों (दरजात) का मालिक	अल्लाह की तरफ़ से	2	कोई दफ़ा करने वाला

وَالرُّوْحُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ ﴿٤﴾

4	साल	पचास हज़ार (50000)	जिस की मिक़दार	एक दिन में	उस की तरफ़	और रूहुल अमीन

पस आज यहां उस का कोई दोस्त नहीं। (35)
और पीप के सिवा (उस के लिए) कोई खाना नहीं। (36)
उसे ख़ताकारों के सिवा कोई न खाएगा। (37)
पस मैं उस की क़सम खाता हूँ जो तुम देखते हो। (38)
और जो तुम नहीं देखते। (39)
बेशक यह रसूले करीम का कलाम है। (40)
और यह किसी शायर का कलाम नहीं, तुम बहुत कम ईमान लाते हो। (41)
और न क़ौल है किसी काहिन का, बहुत कम तुम नसीहत पकड़ते हो। (42)
तमाम जहानों के रब (की तरफ़) से उतारा हुआ। (43)
और अगर वह हम पर बना कर लाता कुछ बातें। (44)
तो यक़ीनन हम उस का दायां हाथ पकड़ लेते। (45)
फिर अलबत्ता हम उस की रगे गर्दन काट देते। (46)
सो तुम में से नहीं कोई भी उस से रोकने वाला। (47)
और बेशक यह (क़ुरआन) परहेज़गारों के लिए अलबत्ता नसीहत है। (48)
और बेशक हम ज़रूर जानते हैं कि तुम में कुछ झुटलाने वाले हैं। (49)
और बेशक यह हसरत है काफ़िरों पर। (50)
और बेशक यह यक़ीनी हक़ है। (51)
पस पाकीज़गी बयान करो अपने अ़ज़मत वाले रब के नाम की। (52)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

एक मांगने वाले (मुन्किरे अ़ज़ाब ने) अ़ज़ाब मांगा (जो) वाक़े होने वाला है। (1)
काफ़िरों के लिए, उसे कोई दफ़ा करने वाला नहीं, (2)
दरजात के मालिक अल्लाह की तरफ़ से। (3)
उस की तरफ़ रूहुल अमीन (जिब्राईल अ) और फ़रिश्ते एक दिन में चढ़ते हैं जिस की तादाद पचास हज़ार बरस की है। (4)

فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيْلًا ۝٥ اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيْدًا ۝٦ وَّنَرٰىهُ

और हम उसे देखते हैं	6	दूर	उसे देख रहे हैं	बेशक वह	5	सब्रे जमील	पस आप (स) सब्र करें

قَرِيْبًا ۝٧ يَوْمَ تَكُوْنُ السَّمَآءُ كَالْمُهْلِ ۝٨ وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ

पहाड़	और होंगे	8	पिघले हुए तांबे की तरह	आस्मान	जिस दिन होगा	7	क़रीब

كَالْعِهْنِ ۝٩ وَلَا يَسْـَٔلُ حَمِيْمٌ حَمِيْمًا ۝١٠ يُّبَصَّرُوْنَهُمْ ؕ يَوَدُّ

ख़ाहिश करेगा	वह देख रहे होंगे उन्हें	10	किसी दोस्त	कोई दोस्त	और न पूछेगा	9	जैसे रंगीन ऊन

الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِيْ مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍۢ بِبَنِيْهِ ۝١١

11	अपने बेटों को	उस दिन	अ़ज़ाब से	काश वह फ़िदये में देदे	मुज्रिम

وَصَاحِبَتِهٖ وَاَخِيْهِ ۝١٢ وَفَصِيْلَتِهِ الَّتِيْ تُـْٔوِيْهِ ۝١٣ وَمَنْ

और जो	13	उस को जगह देता था	वह जो	और अपने कुंबे को	12	और अपने भाई को	और अपनी बीवी को

فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ ثُمَّ يُنْجِيْهِ ۝١٤ كَلَّا ؕ اِنَّهَا لَظٰى ۝١٥ نَزَّاعَةً

उधेड़ने वाली	15	भड़कती हुई आग	बेशक यह	हरगिज़ नहीं	14	यह उसे बचाले	फिर	सब को	ज़मीन में

لِّلشَّوٰى ۝١٦ تَدْعُوْا مَنْ اَدْبَرَ وَتَوَلّٰى ۝١٧ وَجَمَعَ فَاَوْعٰى ۝١٨

18	फिर उसे बन्द रखा	और (माल) जमा किया	17	और मुँह फेर लिया	पीठ फेरी	जिस ने	वह बुलाती है	16	खाल को

اِنَّ الْاِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوْعًا ۝١٩ اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوْعًا ۝٢٠ وَّاِذَا

और जब	20	घबरा उठने वाला	उसे बुराई पहुँचे	जब	19	पैदा किया गया बड़ा बेसब्रा	बेशक इन्सान

مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوْعًا ۝٢١ اِلَّا الْمُصَلِّيْنَ ۝٢٢ الَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ

अपनी नमाज़	पर	वह	वह जो	22	नमाज़ियों	सिवाए	21	बुख़्ल करने वाला	उसे आसाइश पहुँचे

دَآئِمُوْنَ ۝٢٣ وَالَّذِيْنَ فِيْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُوْمٌ ۝٢٤

24	मालूम (मुक़र्रर)	हक़	उन के मालों में	और वह जो	23	हमेशा (पाबन्दी) करते हैं

لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ۝٢٥ وَالَّذِيْنَ يُصَدِّقُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۝٢٦

26	रोज़े जज़ा को	सच मानते हैं	और वह जो	25	और महरूम (न मांगने वाले)	मांगने वालो के लिए

وَالَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ۝٢٧ اِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ

उन के रब का अ़ज़ाब	बेशक	27	डरने वाले	अपने रब के अ़ज़ाब से	वह	और वह जो

غَيْرُ مَاْمُوْنٍ ۝٢٨ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۝٢٩

29	हिफ़ाज़त करने वाले	अपनी शर्मगाहों की	वह	और वह जो	28	बे ख़ौफ़ होने की बात नहीं

اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ۝٣٠

30	कोई मलामत नहीं	पस वह बेशक	उन के दाएं हाथ की मिल्क (बान्दीयां)	जो	या	अपनी बीवीयों से	सिवाए

فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ۝٣١

31	हद से बढ़ने वाले	वह	तो वही लोग	उस के सिवा	फिर जो चाहे

पस आप (स) (उन बातों पर) सब्र करें सब्रे जमील। (5)
बेशक वह उसे दूर देख (समझ) रहे हैं। (6)
और हम उसे क़रीब देखते हैं। (7)
जिस दिन आस्मान पिघले हुए तांबे की तरह होगा। (8)
और पहाड़ (धुन्की हुई) रंगीन ऊन की तरह होंगे। (9)
और कोई दोस्त किसी दोस्त को न पूछेगा। (10)
हालांकि वह उन्हें देख रहे होंगे, मुज्रिम (गुनाहगार) ख़ाहिश करेगा कि काश वह फ़िदये में देदे उस दिन के अ़ज़ाब (से छूटने के लिए) अपने बेटों को, (11)
अपनी बीवी को, और अपने भाई को। (12)
और अपने कुंबे को जो उस को जगह देता था। (13)
और जो ज़मीन में हैं सब (तमाम अहले ज़मीन) को, फिर यह उसे बचाले। (14)
हरगिज़ नहीं, बेशक यह भड़कती हुई आग है। (15)
खाल उधेड़ने वाली। (16)
वह (उसे) बुलाती है जिस ने पीठ फेरी और मुँह फेर लिया, (17)
और माल जमा किया फिर उसे बन्द रखा। (18)
बेशक इन्सान बड़ा बेसब्र (कम हिम्मत) पैदा किया गया है। (19)
जब उसे कोई बुराई पहुँचे तो घबरा उठने वाला है। (20)
और उसे आसाइश पहुँचे तो बुख़्ल करने वाला है। (21)
उन नमाज़ियों के सिवा। (22)
जो अपनी नमाज़ पर पाबन्दी करते हैं। (23)
और जिन के मालों में एक हिस्सा (हक़) मुक़र्रर है। (24)
मांगने वालों और महरूम के लिए। (25)
और वह जो रोज़े जज़ा औ सज़ा को सच मानते हैं। (26)
और वह जो अपने रब के अ़ज़ाब से डरने वाले हैं। (27)
बेशक उन के रब का अ़ज़ाब बेख़ौफ़ होने की चीज़ नहीं। (28)
और वह जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले हैं, (29)
सिवाए अपनी बीवीयों से या अपनी बान्दीयों से, पस बेशक उन के (पास जाने) पर कोई मलामत नहीं। (30)
फिर जो उस के सिवा चाहे तो वही लोग हैं हद से बढ़ने वाले। (31)

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ۝٣٢ وَالَّذِيْنَ

और वह जो	32	रिआयत (हिफ़ाज़त) करने वाले	और अपने अहद	अपनी अमानतों	वह और वह जो

هُمْ بِشَهٰدٰتِهِمْ قَآئِمُوْنَ ۝٣٣ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ

अपनी नमाज़ों की	वह	और वह जो	33	क़ाइम रहने वाले	वह अपनी गवाहियों पर

يُحَافِظُوْنَ ۝٣٤ اُولٰٓئِكَ فِىْ جَنّٰتٍ مُّكْرَمُوْنَ ۝٣٥ فَمَالِ ع ١ ٧

तो क्या हुआ	35	मुकर्रम ओ मुअ़ज़्ज़ज़	बाग़ात में	यही लोग	34	हिफ़ाज़त करने वाले

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا قِبَلَكَ مُهْطِعِيْنَ ۝٣٦ عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ

और बाएं से	दाएं से	36	दौड़ते आरहे हैं	आप (स) की तरफ़	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

عِزِيْنَ ۝٣٧ اَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّدْخَلَ جَنَّةَ

बाग़	कि वह दाख़िल किया जाएगा	उन में से	हर कोई	क्या तमअ़ (लालच) रखता है	37	गिरोह दर गिरोह

نَعِيْمٍ ۝٣٨ كَلَّا ۭ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُوْنَ ۝٣٩ فَلَآ اُقْسِمُ

पस नहीं, मैं क़सम खाता हूँ	39	वह जानते हैं	उस से जो	बेशक हम ने पैदा किया उन्हें	हरगिज़ नहीं	38	नेमतों वाला

بِرَبِّ الْمَشٰرِقِ وَالْمَغٰرِبِ اِنَّا لَقٰدِرُوْنَ ۝٤٠ عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ

कि हम बदल दें	पर	40	अलबत्ता क़ादिर हैं	बेशक हम	और मग़्रिबों	मश्रिक़ों के रब की

خَيْرًا مِّنْهُمْ ۙ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ۝٤١ فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا

बेहूदगियों में पड़े रहें	पस उन्हें छोड़ दें	41	आजिज़ किए जाने वाले	और नहीं हम	उन से	बेहतर

وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِىْ يُوْعَدُوْنَ ۝٤٢ يَوْمَ يَخْرُجُوْنَ

जिस दिन वह निकलेंगे	42	उन से वादा किया जाता है	वह जिस का	अपने दिन से	यहां तक कि वह मिलें	और वह खेलें

مِنَ الْاَجْدَاثِ سِرَاعًا كَاَنَّهُمْ اِلٰى نُصُبٍ يُّوْفِضُوْنَ ۝٤٣ خَاشِعَةً

झुकी हुई	43	लपक रहे हों	निशाने की तरफ़	गोया कि वह	जल्दी जल्दी	क़ब्रों से

اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۭ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِىْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ۝٤٤ ع ٢ ٩ ٨

44	उन से वादा किया जा रहा है	वह जिस का	यह है वह दिन	ज़िल्लत	उन पर छा रही होगी	उन की आँखें

آيَاتُهَا ٢٨ ❀ (٧١) سُوْرَةُ نُوْحٍ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकुआ़त 2	(71) सूरह नूह	आयात 28

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِنَّآ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ اَنْ اَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ

उस से क़ब्ल	अपनी क़ौम को	कि डराओ	उस की क़ौम की तरफ़	नूह (अ)	बेशक हम ने भेजा

اَنْ يَّاْتِيَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝١ قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّىْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٢

2	साफ़ साफ़ डराने वाला	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	1	दर्दनाक अ़ज़ाब	कि उन पर आए

और वह जो अपनी अमानतों और अपने अ़हद की हिफ़ाज़त करने वाले हैं। (32)
और वह जो अपनी गवाहियों पर क़ाइम रहने वाले हैं। (33)
और वह जो अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करने वाले हैं। (34)
यही लोग (बहिश्त के) बाग़ात में मुकर्रम ओ मुअ़ज़्ज़ज़ होंगे। (35)
तो काफ़िरों को क्या हुआ कि वह आप (स) की तरफ़ दौड़ते आ रहे हैं। (36)
दाएं से और बाएं से गिरोह दर गिरोह। (37)
क्या उन में से हर कोई लालच रखता है कि वह (बहिश्त की) नेमतों वाले बाग़ात में दाख़िल किया जाएगा। (38)
हरगिज़ नहीं, बेशक हम ने पैदा किया उन्हें उस चीज़ से जिसे वह ख़ुद जानते हैं। (39)
पस नहीं, मैं मश्रिक़ों और मग़्रिबों के रब की क़सम खाता हूँ। बेशक हम अलबत्ता क़ादिर हैं। (40)
इस पर कि हम बदल दें उन से बेहतर और नहीं हम आजिज़ किए जाने वाले। (41)
पस उन्हें छोड़ दें कि बेहूदगियों में पड़े रहें और वह खेलें कूदें यहां तक कि वह अपने उस दिन से मिलें जिस का उन से वादा किया जाता है। (42)
जिस दिन वह क़ब्रों से जल्दी जल्दी (इस तरह) निकलेंगे गोया के वह निशाने की तरफ़ लपक रहे हैं। (43)
झुकी होंगी उन की आँखें, उन पर ज़िल्लत छा रही होगी, यह है वह दिन जिस का उन से वादा किया जा रहा है। (44)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

बेशक हम ने नूह (अ) को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा कि डराओ अपनी क़ौम को उस से क़ब्ल कि उन पर दर्दनाक अ़ज़ाब आजाए। (1)
उस ने कहा कि ऐ मेरी क़ौम! बेशक मैं तुम्हारे लिए साफ़ साफ़ डराने वाला हूँ। (2)

وقف لازم

اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ وَاَطِيْعُوْنِ ۙ﴿٣﴾ يَغْفِرْ لَكُمْ

तुम्हें	वह बख़्शदेगा	3	और मेरी इताअ़त करो	और उस से डरो	तुम अल्लाह की इबादत करो	कि

مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ

अल्लाह का मुक़र्रर कर्दा वक़्त	बेशक	वक़्ते मुक़र्ररा	तक	और तुम्हें मोहलत देगा	तुम्हारे गुनाह

اِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ ۘ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤﴾ قَالَ رَبِّ

ऐ मेरे रब	उस ने कहा	4	तुम जानते	काश	वह टलेगा नहीं	जब आजाएगा

اِنِّىْ دَعَوْتُ قَوْمِىْ لَيْلًا وَّنَهَارًا ۙ﴿٥﴾ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَآءِىْٓ

मेरा बुलाना	तो उन में ज़ियादा न किया	5	और दिन	रात	अपनी क़ौम को	बेशक मैं ने बुलाया

اِلَّا فِرَارًا ﴿٦﴾ وَاِنِّىْ كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوْٓا اَصَابِعَهُمْ

अपनी उंगलियां	उन्हों ने दे लीं	उन्हें	ताकि तू बख़्शदे	मैं ने उन को बुलाया	जब भी	और बेशक मैं	6	भागने के सिवा

فِىْٓ اٰذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَاَصَرُّوْا وَاسْتَكْبَرُوا

और उन्हों ने तकब्बुर किया	और अड़ गए वह	उपने कपड़े	और उन्हों ने लपेट लिए	अपने कानों में

اسْتِكْبَارًا ﴿٧﴾ ثُمَّ اِنِّىْ دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ۙ﴿٨﴾ ثُمَّ اِنِّىْٓ اَعْلَنْتُ

बेशक मैं ने अ़लानिया समझाया	फिर	8	बाआवाज़े बुलन्द	बेशक मैं ने बुलाया उन्हें	फिर	7	बड़ा तकब्बुर

لَهُمْ وَاَسْرَرْتُ لَهُمْ اِسْرَارًا ۙ﴿٩﴾ فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ؕ

अपना रब	तुम बख़्शिश मांगो	पस मैं ने कहा	9	छुपा कर	उन्हें	और मैं ने पोशीदा समझाया	उन्हें

اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ۙ﴿١٠﴾ يُّرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا ۙ﴿١١﴾

11	मुसलसल बारिश	तुम पर	आस्मान	वह भेजेगा	10	है बड़ा बख़्शने वाला	बेशक वह

وَّيُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ

बाग़ात	तुम्हारे लिए	और वह बनाएगा	और बेटों	मालों के साथ	और मदद देगा तुम्हें

وَّيَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًا ﴿١٢﴾ مَا لَكُمْ لَا تَرْجُوْنَ لِلّٰهِ وَقَارًا ۚ﴿١٣﴾

13	वक़ार	तुम एतिक़ाद नहीं रखते अल्लाह के लिए	क्या हुआ तुम्हें	12	नहरें	तुम्हारे लिए	और वह बनाएगा

وَقَدْ خَلَقَكُمْ اَطْوَارًا ﴿١٤﴾ اَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللّٰهُ

अल्लाह ने पैदा किए	कैसे	क्या तुम नहीं देखते	14	तरह तरह	उस ने पैदा किया तुम्हें

سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۙ﴿١٥﴾ وَّجَعَلَ الْقَمَرَ فِيْهِنَّ نُوْرًا

एक नूर	उन में	चाँद	और उस ने बनाया	15	एक के ऊपर एक	सात आस्मान

وَّجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ﴿١٦﴾ وَاللّٰهُ اَنْۢبَتَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ

ज़मीन से	उस ने उगाया तुम्हें	और अल्लाह	16	चिराग़	सूरज	और उस ने बनाया

نَبَاتًا ۙ﴿١٧﴾ ثُمَّ يُعِيْدُكُمْ فِيْهَا وَيُخْرِجُكُمْ اِخْرَاجًا ۚ﴿١٨﴾

18	निकालना (दोबारा)	और फिर तुम्हें निकालेगा	उस में	वह लौटाएगा तुम्हें	फिर	17	सब्ज़े की तरह

कि तुम अल्लाह की इबादत करो और उस से डरो और मेरी इताअ़त करो, (3)
वह बख़्शदेगा तुम्हें तुम्हारे गुनाह और (मौत के) वक़्ते मुक़र्ररा तक तुम्हें मोहलत देगा। बेशक अल्लाह का मुक़र्रर कर्दा वक़्त जब आजाएगा तो वह टलेगा नहीं, काश तुम जानते। (4)
उस ने कहा कि ऐ मेरे रब! बेशक मैं ने बुलाया अपनी क़ौम को रात और दिन। (5)
तो उन में ज़ियादा न किया मेरा बुलाना सिवाए भागने के। (6)
और बेशक जब भी मैं ने उन्हें बुलाया ताकि तू उन्हें बख़्शदे, उन्हों ने अपनी उंगलियां अपने कानो में दे लीं और उन्हों ने अपने ऊपर कपड़े लपेट लिए और वह अड़ गए और उन्हों ने बड़ा तकब्बुर किया। (7)
फिर बेशक मैं ने उन्हें बा आवाज़े बुलन्द बुलाया। (8)
फिर बेशक मैं ने उन्हें अ़लानिया (भी) समझाया और उन्हें छुपा कर पोशीदा (भी) समझाया। (9)
पस मैं ने कहा कि तुम अपने रब से बख़्शिश मांगो, बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला है। (10)
वह आस्मान से तुम पर मुसलसल बारिश भेजेगा। (11)
और तुम्हें मालों और बेटों से मदद देगा और बनाएगा तुम्हारे लिए बाग़ात और वह बनाएगा तुम्हारे लिए नहरें। (12)
तुम्हें क्या हुआ है कि तुम अल्लाह के लिए वक़ार (अ़ज़मत) का एतिक़ाद नहीं रखते? (13)
और यक़ीनन उस ने पैदा किया तुम्हें तरह तरह से। (14)
क्या तुम नहीं देखते कि कैसे अल्लाह ने सात आस्मान ऊपर तले बनाए? (15)
और उस ने उन में चाँद को एक नूर बनाया और उस ने सूरज को चिराग़ (के मानिंद रोशन) बनाया। (16)
और अल्लाह ने तुम्हें ज़मीन से सब्ज़े की तरह उगाया (पैदा किया)। (17)
फिर वह तुम्हें उस में लौटाएगा और तुम्हें दोबारा (उस से) निकालेगा। (18)

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ بِسَاطًا ﴿١٩﴾ لِّتَسْلُكُوْا مِنْهَا سُبُلًا

रास्ते	उस के	ताकि तुम चलो	19	फ़र्श	ज़मीन	तुम्हारे लिए	उस ने बनाया	और अल्लाह

ع ١ ٢٠ ٩ فِجَاجًا ﴿٢٠﴾ قَالَ نُوْحٌ رَّبِّ اِنَّهُمْ عَصَوْنِيْ وَاتَّبَعُوْا مَنْ

जो-जिस	और उन्हों ने पैरवी की	मेरी नाफ़रमानी की	बेशक उन्हों ने	ऐ मेरे रब	नूह (अ)	कहा	20	कुशादा

لَّمْ يَزِدْهُ مَالُهٗ وَوَلَدُهٗٓ اِلَّا خَسَارًا ﴿٢١﴾ وَمَكَرُوْا مَكْرًا كُبَّارًا ﴿٢٢﴾

22	बड़ी बड़ी	चालें	और उन्हों ने चालें चलीं	21	सिवा ख़सारा	और उस की औलाद	उस का माल	नहीं ज़ियादा किया

وَقَالُوْا لَا تَذَرُنَّ اٰلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَّلَا سُوَاعًا ۙ

और न सुवाअ़	वद	और हरगिज़ न छोड़ना	अपने माबूद	तुम हरगिज़ न छोड़ना	और उन्हों ने कहा

وَّلَا يَغُوْثَ وَيَعُوْقَ وَنَسْرًا ﴿٢٣﴾ وَقَدْ اَضَلُّوْا كَثِيْرًا ۚ وَلَا تَزِدِ

और न ज़ियादा कर	बहुत	और तहक़ीक उन्हों ने गुमराह किया	23	और नस्र	और यउ़क़	और न यगूस

الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا ضَلٰلًا ﴿٢٤﴾ مِمَّا خَطِيْٓـٰٔتِهِمْ اُغْرِقُوْا فَاُدْخِلُوْا

फिर वह दाख़िल किए गए	वह ग़र्क़ किए गए	अपनी ख़ताएं	ब सबब	24	गुमराही के सिवा	ज़ालिमों

نَارًا ۙ فَلَمْ يَجِدُوْا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْصَارًا ﴿٢٥﴾ وَقَالَ

और कहा	25	कोई मददगार	अल्लाह के सिवा	अपने लिए	उन्हों ने पाया	तो न	आग

نُوْحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا ﴿٢٦﴾

26	कोई बसने वाला	काफ़िरों में से	ज़मीन पर	तू न छोड़	ऐ मेरे रब	नूह (अ)

اِنَّكَ اِنْ تَذَرْهُمْ يُضِلُّوْا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوْٓا اِلَّا فَاجِرًا

बदकार	सिवाए	और न जनेंगे	तेरे बन्दे	वह गुमराह करेंगे	उन्हें छोड़ दिया	अगर	बेशक तू

كَفَّارًا ﴿٢٧﴾ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ

दाख़िल हुआ	और उसे जो	और मेरे माँ बाप को	मुझे बख़्शदे	ऐ मेरे रब	27	नाशुक्रे

بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَّلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۭ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ

ज़ालिमों	और न बढ़ा	और मोमिन औरतों	और मोमिन मर्दों को	ईमान ला कर	मेरे घर

ع ٢ ٨ ١٠ النّصف اِلَّا تَبَارًا ﴿٢٨﴾

	28	हलाकत के सिवा	

آيَاتُهَا ٢٨ ❀ سُوْرَةُ الْجِنِّ (٧٢) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकुआत 2 (72) सूरतुल जिन्न आयात 28

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ۙ﴿١﴾

1	एक अ़जीब	क़ुरआन	बेशक हम ने सुना	तो उन्हों ने कहा	एक जमाअ़त जिन्नात की	कि इसे सुना	मेरी तरफ़	आप कह दें कि मुझे वहि की गई

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श बनाया। (19)
ताकि तुम चलो फिरो उस के कुशादा रास्तों में। (20)
नूह (अ) ने कहा कि ऐ मेरे रब! बेशक उन्हों ने मेरी नाफ़रमानी की और (उस की) पैरवी की जिस को उस के माल ने ज़ियादा नहीं किया और न उस की औलाद ने ख़सारे के सिवा। (21)
और उन्हों ने बड़ी बड़ी चालें चलीं। (22)
और उन्हों ने कहा कि तुम हरगिज़ न छोड़ना अपने माबूदाने (बातिल) को और हरगिज़ न छोड़ना वद् और न सुवाअ़ और न यगूस और यउ़क़ और नस्र (बुतों) को। (23)
और उन्हों ने गुमराह किया बहुतों को, और ज़ालिमों को न ज़ियादा कर गुमराही के सिवा। (24)
अपनी ख़ताओं के सबब वह ग़र्क़ किए गए, फिर वह आग में दाख़िल किए गए तो उन्हों ने अपने लिए अल्लाह के सिवा न पाया कोई मददगार। (25)
और नूह (अ) ने कहा कि ऐ मेरे रब! तू न छोड़ ज़मीन पर काफ़िरों में से कोई बसने वाला। (26)
बेशक अगर तू ने उन्हें छोड़ दिया तो वह तेरे बन्दों को गुमराह करेंगे और न जनेंगे बदकार नाशुक्र (औलाद) के सिवा। (27)
ऐ मेरे रब! मुझे बख़्शदे और मेरे माँ बाप को और उसे जो दाख़िल हुआ मेरे घर में ईमान ला कर, और मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों को, और ज़ालिमों को हलाकत के सिवा न बढ़ा। (28)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
आप (स) फ़रमा दें: मुझे वहि की गई है कि जिन्नात की एक जमाअ़त ने उसे (क़ुरआन को) सुना तो उन्हों ने कहा कि बेशक हम ने एक अ़जीब क़ुरआन सुना है। (1)

يَّهۡدِىۡۤ اِلَى الرُّشۡدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ؕ وَلَنۡ نُّشۡرِكَ بِرَبِّنَاۤ اَحَدًا ۙ﴿۲﴾

2	किसी को	और हम हरगिज़ शरीक न ठहराएंगे अपने रब के साथ	उस पर	तो हम ईमान लाए	हिदायत की तरफ़	वह रहनुमाई करता है

وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۙ﴿۳﴾

3	और न औलाद	बीवी	उस ने नहीं बनाया	हमारा रब	शान	बड़ी बुलंद	और यह कि

وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوۡلُ سَفِيۡهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ۙ﴿۴﴾ وَّاَنَّا ظَنَنَّاۤ

और यह कि हम ने गुमान किया	4	ख़िलाफ़े हक़ बातें	अल्लाह पर	हम में से बेवकूफ़	कहते थे	और यह कि

اَنۡ لَّنۡ تَقُوۡلَ الۡاِنۡسُ وَالۡجِنُّ عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۙ﴿۵﴾ وَّاَنَّهٗ كَانَ

थे	और यह कि	5	झूट	अल्लाह पर	और जिन्न	इन्सान	हरगिज़ न कहेंगे	कि

رِجَالٌ مِّنَ الۡاِنۡسِ يَعُوۡذُوۡنَ بِرِجَالٍ مِّنَ الۡجِنِّ فَزَادُوۡهُمۡ

तो उन्हों ने (जिन्नात का) बढ़ा दिया	जिन्नात से	लोगों से	पनाह लेते (थे)	इन्सानों में से	कुछ आदमी

رَهَقًا ۙ﴿۶﴾ وَّاَنَّهُمۡ ظَنُّوۡا كَمَا ظَنَنۡتُمۡ اَنۡ لَّنۡ يَّبۡعَثَ اللّٰهُ اَحَدًا ۙ﴿۷﴾

7	किसी को	रसूल बना कर भेजेगा अल्लाह	कि हरगिज़ न	जैसे तुम ने गुमान किया था	उन्हों ने गुमान किया	और यह कि वह	6	तकब्बुर

وَّاَنَّا لَمَسۡنَا السَّمَآءَ فَوَجَدۡنٰهَا مُلِئَتۡ حَرَسًا شَدِيۡدًا

सख़्त	पहरेदार	भरा हुआ	तो हम ने उसे पाया	आस्मान	और यह कि हम ने छुआ (टटोला)

وَّشُهُبًا ۙ﴿۸﴾ وَّاَنَّا كُنَّا نَقۡعُدُ مِنۡهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمۡعِ ؕ فَمَنۡ

पस जो	सुनने के लिए	ठिकाने	उस के	हम बैठा करते थे	और यह कि	8	और शोले

يَّسۡتَمِعِ الۡاٰنَ يَجِدۡ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا ۙ﴿۹﴾ وَّاَنَّا لَا نَدۡرِىۡۤ

नहीं जानते	और यह कि हम	9	घात लगाया हुआ	शोला	वह पाता है अपने लिए	अब	सुनता है

اَشَرٌّ اُرِيۡدَ بِمَنۡ فِى الۡاَرۡضِ اَمۡ اَرَادَ بِهِمۡ رَبُّهُمۡ

उन का रब	उन से	या इरादा फ़रमाया है	जो ज़मीन में	उन के साथ	इरादा किया गया	आया बुराई

رَشَدًا ۙ﴿۱۰﴾ وَّاَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوۡنَ وَمِنَّا دُوۡنَ ذٰلِكَ ؕ كُنَّا

हम थे	उस के अलावा	और हम में से	नेकोकार (जमा)	हम में से	और यह कि	10	हिदायत

طَرَآئِقَ قِدَدًا ۙ﴿۱۱﴾ وَّاَنَّا ظَنَنَّاۤ اَنۡ لَّنۡ نُّعۡجِزَ اللّٰهَ فِى الۡاَرۡضِ

ज़मीन में	हरा सकेंगे अल्लाह को	कि हम हरगिज़ न	हम समझते थे	और यह कि	11	मुख़्तलिफ़	राहें

وَلَنۡ نُّعۡجِزَهٗ هَرَبًا ۙ﴿۱۲﴾ وَّاَنَّا لَمَّا سَمِعۡنَا الۡهُدٰۤى اٰمَنَّا بِهٖ ؕ

हम ईमान ले आए उस पर	हिदायत	जब हम ने सुनी	और यह कि	12	भाग कर	और हम उस को हरगिज़ न हरा सकेंगे

فَمَنۡ يُّؤۡمِنۡۢ بِرَبِّهٖ فَلَا يَخَافُ بَخۡسًا وَّلَا رَهَقًا ۙ﴿۱۳﴾ وَّاَنَّا مِنَّا

हम में से	और यह कि	13	और न किसी ज़ुल्म	किसी नुक़्सान	तो उसे ख़ौफ़ न होगा	अपने रब पर ईमान लाए	सो जो

الۡمُسۡلِمُوۡنَ وَمِنَّا الۡقٰسِطُوۡنَ ؕ فَمَنۡ اَسۡلَمَ فَاُولٰٓئِكَ تَحَرَّوۡا رَشَدًا ۙ﴿۱۴﴾

14	भलाई	उन्हों ने क़स्द किया	तो वही हैं	पस जो इसलाम लाया	गुनाहगार	और हम में से	मुसलमान (जमा)

वह रहनुमाई करता है हिदायत की तरफ़, तो हम उस पर ईमान ले आए, और हम अपने रब के साथ हरगिज़ किसी को शरीक न ठहराएंगे। (2)
और यह कि हमारे रब की शान बड़ी बुलंद है। उस ने नहीं बनाया किसी को अपनी बीवी और न औलाद। (3)
और यह कि हम में से बेवकूफ़ कहते थे अल्लाह पर ख़िलाफ़े हक़ बातें। (4)
और यह कि हम ने गुमान किया कि हरगिज़ इन्सान और जिन्न अल्लाह पर (अल्लाह की शान में) झूट न कहेंगे। (5)
और यह कि इन्सानों में से कुछ आदमी जिन्नात के लोगों से पनाह लेते थे और उन्हों ने जिन्नात का तकब्बुर और बढ़ा दिया। (6)
और उन्हों ने गुमान किया जैसे तुम ने गुमान किया था कि हरगिज़ अल्लाह किसी को रसूल बना कर न भेजेगा। (7)
और यह कि हम ने टटोला आस्मानों को तो हम ने उसे सख़्त पहरेदारों और शोलों से भरा हुआ पाया। (8)
और यह कि हम उस के ठिकानों में सुनने के लिए बैठा करते थे। पस अब जो सुनता है (सुनना चाहता है) वह (वहां) अपने लिए घात लगाया हुआ शोला पाता है। (9)
और यह कि हम नहीं जानते कि जो ज़मीन में हैं आया उन के साथ बुराई का इरादा किया गया है या उन से (अल्लाह ने) हिदायत का इरादा फ़रमाया है। (10)
और यह कि हम में से (कुछ) नेकोकार हैं और हम में से (कुछ) उस के अलावा हैं, हम मुख़्तलिफ़ राहों पर हैं। (11)
और यह कि हम समझते हैं कि हम अल्लाह को हरगिज़ न हरा सकेंगे ज़मीन में और न हरगिज़ हम उस को भाग कर हरा सकेंगे। (12)
और यह कि हम ने हिदायत सुनी तो हम उस पर ईमान ले आए, सो जो अपने रब पर ईमान लाए तो उसे न किसी नुक़्सान का ख़ौफ़ होगा और न किसी ज़ुल्म का। (13)
और यह कि हम में से (कुछ) मुसलमान (फ़रमांबरदार) हैं और हम में से (कुछ) गुनाहगार हैं। पस जो इसलाम लाया तो वही हैं जिन्हों ने भलाई का क़स्द किया। (14)

وَاَمَّا الْقٰسِطُوْنَ فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ﴿١٥﴾ وَّاَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا

और रहे	गुनाहगार (जमा)	तो वह हुए	जहन्नम का	ईंधन	15	और यह कि अगर	वह क़ाइम रहते

عَلَى الطَّرِيْقَةِ لَاَسْقَيْنٰهُمْ مَّآءً غَدَقًا ﴿١٦﴾ لِّنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ

(सीधे) रास्ते पर	तो अलबत्ता हम उन्हें पिलाते	पानी	वाफ़िर	16	ताकि हम उन्हें आज़माएं	उस में

وَمَنْ يُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ﴿١٧﴾

और जो	रूगर्दानी करेगा	से	अपने रब की याद	वह उसे दाख़िल करेगा	अज़ाब	सख़्त	17

وَّاَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا ﴿١٨﴾ وَّاَنَّهٗ

और यह कि	मस्जिदें अल्लाह के लिए	तो तुम न पुकारो (बन्दगी न करो)	अल्लाह के साथ	किसी की	18	और यह कि

لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ يَدْعُوْهُ كَادُوْا يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا ﴿١٩﴾ ع ١ ١٩ ١١

जब खड़ा हुआ	अल्लाह का बन्दा	कि वह उस की इबादत करे	क़रीब था	वह हो जाएं	उस पर	हल्क़ा दर हल्क़ा	19

قُلْ اِنَّمَآ اَدْعُوْا رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢٠﴾ قُلْ اِنِّيْ لَآ اَمْلِكُ

फ़रमा दें इस के सिवा नहीं	सिर्फ़ मैं अपने रब की इबादत करता हूँ	और मैं शरीक नहीं करता	उस के साथ किसी को	20	फ़रमा दें	बेशक मैं	इख़्तियार नहीं रखता

لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا رَشَدًا ﴿٢١﴾ قُلْ اِنِّيْ لَنْ يُّجِيْرَنِيْ مِنَ اللّٰهِ

तुम्हारे लिए	किसी ज़र्र	और न किसी भलाई	21	फ़रमा दें	बेशक मुझे	मुझे हरगिज़ पनाह न देगा	अल्लाह से

اَحَدٌ ۙ وَّلَنْ اَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿٢٢﴾ اِلَّا بَلٰغًا

कोई	और मैं हरगिज़ न पाऊँगा	उस के सिवा	कोई जाए पनाह	22	मगर (पैग़ाम) पहुँचाना

مِّنَ اللّٰهِ وَرِسٰلٰتِهٖ ؕ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ لَهٗ

अल्लाह की तरफ़ से	और उस के पैग़ामात	और जो	नाफ़रमानी करे अल्लाह की	और उस के रसूल की	तो बेशक उस के लिए

نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ﴿٢٣﴾ حَتّٰٓى اِذَا رَاَوْا

जहन्नम की आग	हमेशा रहेंगे	उस में	हमेशा हमेशा	23	यहां तक कि	जब वह देखेंगे

مَا يُوْعَدُوْنَ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ اَضْعَفُ نَاصِرًا وَّاَقَلُّ عَدَدًا ﴿٢٤﴾

जो उन्हें वादा दिया जाता है	तो वह अनक़रीब जान लेंगे	किस	कमज़ोर तरीन	मददगार	और कम तर	तादाद में	24

قُلْ اِنْ اَدْرِيْٓ اَقَرِيْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ اَمْ يَجْعَلُ

फ़रमा दें	नहीं	मैं जानता	आया क़रीब है	जो तुम्हें वादा दिया जाता है	या कर देगा

لَهٗ رَبِّيْٓ اَمَدًا ﴿٢٥﴾ عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ

उस के लिए	मेरा रब	मुद्दत	25	ग़ैब का जानने वाला	वह ज़ाहिर नहीं करता	अपने ग़ैब पर

اَحَدًا ﴿٢٦﴾ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ

किसी को	26	सिवाए	जिस को	वह पसंद करता है	रसूलों में से	तो बेशक वह

يَسْلُكُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ﴿٢٧﴾

चलाता है	उस के आगे से	और उस के पीछे से	मुहाफ़िज़ (फ़रिश्ते)	27	

और रहे गुनाहगार तो वह जहन्नम का ईंधन हुए। (15)
और (मुझे वहि की गई है) कि अगर वह क़ाइम रहते हैं सीधे रास्ते पर तो हम उन्हें वाफ़िर पानी पिलाते। (16)
ताकि हम उन्हें उस में आज़माएं, और जो अपने रब की याद से मुंह मोड़ेगा वह उसे सख़्त अ़ज़ाब में दाख़िल करेगा। (17)
और यह कि मस्जिदें अल्लाह के लिए हैं तो तुम अल्लाह के साथ किसी की बन्दगी न करो। (18)
और यह कि जब खड़ा हुआ अल्लाह का बन्दा कि वह उस (अल्लाह) की इबादत करे तो क़रीब था कि वह उस पर हल्क़ा दर हल्क़ा हो जाएं। (19)
आप (स) फ़रमा दें कि मैं सिर्फ़ अपने रब की इबादत करता हूँ और मैं शरीक नहीं करता किसी को उस के साथ। (20)
आप (स) फ़रमा दें कि बेशक मैं तुम्हारे लिए इख़्तियार नहीं रखता किसी ज़र्र का और न किसी भलाई का। (21)
आप (स) फ़रमा दें कि बेशक मुझे हरगिज़ पनाह न देगा अल्लाह से कोई भी, और मैं उस के सिवा कोई जाए पनाह न पाऊँगा। (22)
मगर (मेरा काम है) अल्लाह की तरफ़ से उस का कहा और पैग़ाम पहुँचाना और जो नाफ़रमानी करेगा अल्लाह की और उस के रसूल (स) की तो बेशक उस के लिए जहन्नम की आग है, ऐसे लोग उस में हमेशा हमेशा रहेंगे। (23)
यहां तक कि जब वह देखेंगे जो उन्हें वादा दिया जाता है तो वह जान लेंगे कि किस का मददगार कमज़ोर तरीन है और तादाद में कम तर है। (24)
आप (स) फ़रमा दें: मैं नहीं जानता कि आया क़रीब है जो तुम्हें वादा दिया जाता है या उस के लिए मेरा रब कोई मुद्दते (दराज़) मुक़र्रर कर देगा। (25)
(वह) ग़ैब का जानने वाला है, अपने ग़ैब पर किसी को मुत्तला नहीं करता, (26)
सिवाए (उस के) जिसे वह पसंद करता है रसूलों में से, फिर बेशक उस के आगे और उस के पीछे मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते चलाता है, (27)

لِّيَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ وَاَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ

जो उन के पास	और उस ने अहाता किया हुआ है	अपने रब के	पैग़ामात	उन्हों ने तहक़ीक़ पहुँचा दिए	कि	ता कि वह मालूम कर ले

ع ٢ ٩ ١٢

وَاَحْصٰى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ﴿٢٨﴾

	28	गिनती में	हर शै	और उस ने शुमार कर रखी है	

آيَاتُهَا ٢٠ ❀ سُوْرَةُ الْمُزَّمِّلِ (٧٣) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकुआत 2 — (73) सूरतुल मुज़्ज़म्मिल कपड़ों में लिपटने वाले — आयात 20

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يٰٓاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ﴿١﴾ قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٢﴾ نِّصْفَهٗٓ اَوِ انْقُصْ

कम कर लें	या	उस का निस्फ़	2	थोड़ा	मगर	रात में क़ियाम करें	1	ऐ कपड़ों में लिपटने वाले (मुहम्मद (स)

مِنْهُ قَلِيْلًا ﴿٣﴾ اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ﴿٤﴾

4	तरतील के साथ	क़ुरआन	और ठहर ठहर कर पढ़ें	उस पर-से	या ज़ियादा कर लें	3	थोड़ा	उस में से

اِنَّا سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيْلًا ﴿٥﴾ اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ

रात	उठना	बेशक	5	एक भारी कलाम	आप (स)	बेशक हम अनक़रीब डाल देंगे

هِيَ اَشَدُّ وَطْاً وَّاَقْوَمُ قِيْلًا ﴿٦﴾ اِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا

शुग़ल	दिन में	बेशक आप (स) के लिए	6	बात/तिलावत	और ज़ियादा दुरुस्त	यह सख़्त (नफ़्स को) रोन्दने वाला

طَوِيْلًا ﴿٧﴾ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا ﴿٨﴾

8	(सब से) छूट कर	उस की तरफ़	और छूट जाएं	अपने रब का नाम	और आप (स) याद करें	7	तवील

رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ﴿٩﴾

9	कारसाज़	पस पकड़ लो (बना लो) उस को	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	और मग़्रिब	रब मश्रिक़ का

وَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيْلًا ﴿١٠﴾

10	अच्छी तरह	किनारा कश हो कर	और उन्हें छोड़ दें	जो वह कहते हैं	पर	और आप (स) सब्र करें

وَذَرْنِيْ وَالْمُكَذِّبِيْنَ اُولِي النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيْلًا ﴿١١﴾ اِنَّ

बेशक	11	थोड़ी	और उन को मोहलत दें	ख़ुशहाल लोगों	और झुटलाने वालों	और मुझे छोड़ दो

لَدَيْنَآ اَنْكَالًا وَّجَحِيْمًا ﴿١٢﴾ وَّطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّعَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٣﴾ يَوْمَ

जिस दिन	13	दर्दनाक	और अज़ाब	गले में अटक जाने वाला	और खाना	12	और दहकती आग	अज़ाब	हमारे हां

تَرْجُفُ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيْبًا مَّهِيْلًا ﴿١٤﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنَآ

बेशक हम ने भेजा	14	रेज़ा रेज़ा	रेत के तोदे	पहाड़	और हो जाएंगे	और पहाड़	ज़मीन	कांपेगी

اِلَيْكُمْ رَسُوْلًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ رَسُوْلًا ﴿١٥﴾

15	एक रसूल	फ़िरऔन की तरफ़	जैसे हम ने भेजा	तुम पर	गवाही देने वाला	एक रसूल	तुम्हारी तरफ़

ता कि वह मालूम कर ले कि उन्हों ने पहुँचा दिए हैं अपने रब के पैग़ामात और उस ने अहाता किया हुआ है जो कुछ उन के पास है और हर चीज़ को गिनती में शुमार कर रखा है। (28)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ऐ मुज़्ज़म्मिल (कपड़ों में लिपटने वाले मुहम्मद (स)! (1)

रात में क़ियाम करें मगर थोड़ा। (2)

उस (रात) का निस्फ़ हिस्सा या उस में से थोड़ा कम कर लें। (3)

या (कुछ) ज़ियादा कर लें उस से, और क़ुरआन तरतील के साथ ठहर ठहर कर पढ़ें। (4)

बेशक हम आप (स) पर अनक़रीब एक भारी कलाम (क़ुरआने करीम) डालेंगे (नाज़िल करेंगे)। (5)

बेशक रात का उठना नफ़्स को रोन्दने वाला है और (क़ुरआन) पढ़ने के लिए ज़ियादा दुरुस्त है। (6)

बेशक आप (स) के लिए दिन में बहुत काम हैं। (7)

और आप (स) अपने रब के नाम का ज़िक्र करें और सब से कट कर (अलग हो कर) उस के हो जाएं। (8)

(वह) मश्रिक़ ओ मग़्रिब का रब है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं, पस आप (स) उस को कारसाज़ बनालें। (9)

और आप (स) सब्र करें उस पर जो वह कहते हैं और अच्छी तरह किनारा कश हो कर आप (स) उन्हें छोड़ दें। (10)

और मुझे और झुटलाने वाले ख़ुशहाल लोगों को छोड़ दें (समझ लेने दें) और उन को थोड़ी मोहलत दे दें। (11)

बेशक हमारे हां अज़ाब है और दहकती आग। (12)

और खाना है गले में अटक जाने वाला और अज़ाब है दर्दनाक। (13)

जिस दिन ज़मीन और पहाड़ कांपेंगे और पहाड़ रेज़ा रेज़ा (हो कर) रेत के तोदे हो जाएंगे। (14)

बेशक हम ने भेजा तुम्हारी तरफ़ एक रसूल (मुहम्मद स) गवाही देने वाला तुम पर जैसे हम ने भेजा था फ़िरऔन की तरफ़ एक रसूल (मूसा अ)। (15)

فَعَصٰى فِرْعَوْنُ الرَّسُوْلَ فَاَخَذْنٰهُ اَخْذًا وَّبِيْلًا ﴿١٦﴾

पस कहा न माना	फ़िरऔन	रसूल	तो हम ने उसे पकड़ लिया	पकड़	बड़े वबाल	16

فَكَيْفَ تَتَّقُوْنَ اِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ

तो कैसे	तुम बचोगे	अगर तुम ने कुफ़्र किया	उस दिन	कर देगा	बच्चों को

شِيْبَا ﴿١٧﴾ اِۨلسَّمَآءُ مُنْفَطِرٌۢ بِهٖ ؕ كَانَ وَعْدُهٗ مَفْعُوْلًا ﴿١٨﴾

बूढ़ा	17	आस्मान	फट जाएगा	उस से	है	उस का वादा	पूरा हो कर रहने वाला	18

اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿١٩﴾ ع ١٩ ١٣

बेशक यह	नसीहत	तो जो	चाहे	इख़्तियार कर ले	अपने रब की तरफ़	राह	19

اِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ اَنَّكَ تَقُوْمُ اَدْنٰى مِنْ ثُلُثَيِ الَّيْلِ

बेशक आप (स) का रब	वह जानता है	कि आप (स)	क़ियाम करते हैं	क़रीब	दो तिहाई (2/3) रात के

وَنِصْفَهٗ وَثُلُثَهٗ وَطَآئِفَةٌ مِّنَ الَّذِيْنَ مَعَكَ ؕ وَاللّٰهُ

और आधी (1/2) रात	और उस का तिहाई (1/3)	और एक जमाअत	से	जो आप (स) के साथ	और अल्लाह

يُقَدِّرُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ؕ عَلِمَ اَنْ لَّنْ تُحْصُوْهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ

अन्दाज़ा फ़रमाता है	रात और दिन	उस ने जाना	कि तुम हरगिज़ (वक़्त का) शुमार न कर सकोगे	तो उस ने तुम पर इनायत की

فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ ؕ عَلِمَ اَنْ سَيَكُوْنُ

तो तुम पढ़ा करो	जिस क़द्र आसानी से हो सके	क़ुरआन से	उस ने जाना	कि अलबत्ता होंगे

مِنْكُمْ مَّرْضٰى ۙ وَاٰخَرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ فِى الْاَرْضِ

तुम में से कोई	बीमार	और दूसरे	वह सफ़र करेंगे	ज़मीन में

يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ ۙ وَاٰخَرُوْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ

तलाश करते हुए	से	अल्लाह का फ़ज़्ल (रोज़ी)	और कई दूसरे	वह जिहाद करेंगे	अल्लाह की राह में

فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۙ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ

पस पढ़ लिया करो	जिस क़द्र आसानी से हो सके	उस से	और क़ाइम करो	नमाज़

وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ؕ وَمَا تُقَدِّمُوْا

और अदा करते रहो ज़कात	और अल्लाह को क़र्ज़ दो	क़र्ज़ हस्ना (इख़्लास से)	और जो	तुम आगे भेजोगे

لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا

अपने लिए	कोई नेकी	तुम उसे पाओगे	अल्लाह के हां	वह बेहतर

وَّاَعْظَمَ اَجْرًا ؕ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ

और अज़ीम तर	अजर में	और तुम बख़्शिश मांगो अल्लाह से	बेशक अल्लाह	बख़्शने वाला

رَّحِيْمٌ ﴿٢٠﴾ ع ٢ ١ ١٤

निहायत रहम करने वाला	20

पस फ़िरऔन ने रसूल का कहा न माना तो हम ने उसे (फ़िरऔन को) बड़े वबाल की पकड़ में पकड़ लिया। (16)

अगर तुम ने कुफ़्र किया तो उस दिन कैसे बचोगे? जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा। (17)

उस से आस्मान फट जाएगा, उस का वादा पूरा हो कर रहने वाला है। (18)

बेशक यह (कुरआन) नसीहत है, जो कोई चाहे इख़्तियार कर ले (इस के ज़रीए) अपने रब की तरफ़ राह। (19)

बेशक आप (स) का रब जानता है कि आप (स) (कभी) दो तिहाई रात के क़रीब क़ियाम करते हैं और (कभी) आधी रात और (कभी) उस का तिहाई हिस्सा और जो आप (स) के साथी हैं उन में से एक जमाअत (भी), और अल्लाह रात और दिन का अन्दाज़ा फ़रमाता है, उस ने जाना कि तुम हरगिज़ निबाह न कर सकोगे तो उस ने तुम पर इनायत फ़रमाई, पस तुम कुरआन में जिस क़द्र आसानी से हो सके पढ़ लिया करो, उस ने जाना कि अलबत्ता तुम में से कोई बीमार होंगे और दूसरे रोज़ी तलाश करते हुए ज़मीन में सफ़र करेंगे और कई दूसरे अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे, पस उस में से जिस क़द्र आसानी से हो सके तुम पढ़ लिया करो और तुम नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात अदा करते रहो और अल्लाह को इख़्लास से क़र्ज़ हस्ना दो, और कोई नेकी जो तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे अल्लाह के हां बेहतर और अजर में अज़ीम तर पाओगे, और तुम अल्लाह से बख़्शिश मांगो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है। (20)

آيَاتُهَا ٥٦ ❀ سُوْرَةُ الْمُدَّثِّرِ (٧٤) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकुआत 2 | (74) सूरतुल मुद्दस्सिर कपड़े में लिपटे हुए | आयात 56

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يٰٓاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۝١ قُمْ فَاَنْذِرْ ۝٢ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۝٣ وَثِيَابَكَ

और अपने कपड़े	3	और अपने रब की बड़ाई बयान करो	2	फिर डराओ	खड़े हो जाओ	1	ऐ कपड़े में लिपटे हुए (मुहम्मद (स)

فَطَهِّرْ ۝٤ وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۝٥ وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ۝٦

6	ज़ियादा लेने (की ग़रज़ से)	और एहसान न रखो	5	सो दूर रहो	और पलीदी	4	सो पाक करो

وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ۝٧ فَاِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُوْرِ ۝٨ فَذٰلِكَ يَوْمَئِذٍ

उस दिन	तो वह	8	सूर में	फिर जब फूंका जाएगा	7	सब्र करो	और अपने रब के लिए

يَّوْمٌ عَسِيْرٌ ۝٩ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ غَيْرُ يَسِيْرٍ ۝١٠ ذَرْنِيْ وَمَنْ

और जिसे	मुझे छोड़ दो	10	न आसान	काफ़िरों पर	9	बड़ा दुश्वार	दिन

خَلَقْتُ وَحِيْدًا ۝١١ وَّجَعَلْتُ لَهٗ مَالًا مَّمْدُوْدًا ۝١٢ وَّبَنِيْنَ

और बेटे	12	बहुत सारा माल	उसे	और मैं ने दिया	11	अकेला	मैं ने पैदा किया

شُهُوْدًا ۝١٣ وَّمَهَّدْتُّ لَهٗ تَمْهِيْدًا ۝١٤ ثُمَّ يَطْمَعُ

वह तमअ़ करता है	फिर	14	खूब हमवार	उस के लिए	और हमवार किया	13	सामने हाज़िर रहने वाले

اَنْ اَزِيْدَ ۝١٥ كَلَّا ؕ اِنَّهٗ كَانَ لِاٰيٰتِنَا عَنِيْدًا ۝١٦ سَاُرْهِقُهٗ

अब उस से चढ़वाऊँगा	16	इनाद रखने वाला (मुख़ालिफ़)	हमारी आयात का	बेशक वह है	हरगिज़ नहीं	15	कि (और) ज़ियादा दूँ

صَعُوْدًا ۝١٧ اِنَّهٗ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ۝١٨ فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۝١٩

19	उस ने अन्दाज़ा किया	कैसा	सो वह मारा जाए	18	और उस ने अन्दाज़ा किया	बेशक उस ने सोचा	17	बड़ी चढ़ाई

ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۝٢٠ ثُمَّ نَظَرَ ۝٢١ ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ۝٢٢

22	और मुँह बिगाड़ लिया	फिर उस ने तेवरी चढ़ाई	21	फिर उस ने देखा	20	कैसा उस ने अन्दाज़ा किया	फिर वह मारा जाए

ثُمَّ اَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ۝٢٣ فَقَالَ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ

मगर (सिर्फ़) जादू	नहीं यह	तो उस ने कहा	23	और उस ने तकब्बुर किया	फिर उस ने पीठ फेर ली

يُّؤْثَرُ ۝٢٤ اِنْ هٰذَآ اِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ۝٢٥ سَاُصْلِيْهِ

अ़नक़रीब उसे डाल दूँगा	25	आदमी का कलाम	मगर (सिर्फ़)	नहीं यह	24	अगलों से नक़्ल किया जाता है

سَقَرَ ۝٢٦ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سَقَرُ ۝٢٧ لَا تُبْقِيْ

वह न बाक़ी रखेगी	27	सक़र क्या है	और तुम क्या समझे?	26	सक़र (जहन्नम)

وَلَا تَذَرُ ۝٢٨ لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَرِ ۝٢٩ عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ۝٣٠

30	उस पर हैं उन्नीस (19) दारोग़ा	29	आदमी को	झुलस देने वाली	28	और न छोड़ेगी

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
ऐ कपड़ों में लिपटे हुए (मुहम्मद (स)! (1)
खड़े हो जाओ, फिर डराओ, (2)
और अपने रब की बड़ाई बयान करो, (3)
और अपने कपड़े पाक रखो, (4)
और पलीदी से दूर रहो। (5)
और ज़ियादा लेने की ग़र्ज़ से एहसान न रखो, (6)
और अपने रब की (रज़ा जूई) के लिए सब्र करो। (7)
फिर जब सूर फूंका जाएगा। (8)
तो वह दिन बड़ा दुश्वार दिन होगा। (9)
काफ़िरों पर आसान न होगा। (10)
मुझे और उसे छोड़ दो जिसे मैं ने अकेला पैदा किया। (11)
और मैं ने उसे दिया बहुत सारा माल, (12)
और सामने हाज़िर रहने वाले बेटे, (13)
और हमवार किया उस के लिए (सरदार बनने का रास्ता) खूब हमवार, (14)
फिर वह लालच करता है कि और ज़ियादा दूँ। (15)
हरगिज़ नहीं, बेशक वह हमारी आयात का मुख़ालिफ़ है। (16)
अब उसे कठिन चढ़ाई चढ़वाऊँगा। (17)
बेशक उस ने सोचा और कुछ बात बनाने की कोशिश की, (18)
सो वह मारा जाए कि कैसी बात बनाने की कोशिश की, (19)
फिर वह मारा जाए कि कैसी बात बनाने की कोशिश की। (20)
फिर उस ने देखा, (21)
फिर उस ने तेवरी चढ़ाई और मुँह बिगाड़ लिया, (22)
फिर उस ने पीठ फेर ली और उस ने तकब्बुर किया। (23)
पस उस ने कहाः यह तो सिर्फ़ एक जादू है (जो) अगलों से चला आता है, (24)
यह तो सिर्फ़ एक आदमी का कलाम है। (25)
अ़नक़रीब मैं उसे सक़र में डाल दूँगा। (26)
और तुम क्या जानो कि सक़र क्या है? (27)
(वह है आग) न बाक़ी रखेगी और न छोड़ेगी, (28)
आदमी को झुलस देने वाली है, (29)
उस पर उन्नीस (19) दारोग़ा (मुक़र्रर) हैं। (30)

وَمَا جَعَلْنَآ اَصْحٰبَ النَّارِ اِلَّا مَلٰٓئِكَةً ۙ وَّمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ

उन की तादाद	और हम ने नहीं रखी	फ़रिश्ते	मगर (सिर्फ़)	दोज़ख़ के दारोग़े	और हम ने नहीं बनाए

اِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۙ لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ

किताब दी गई (अहले किताब)	वह लोग जिन्हें	ताकि वह यक़ीन कर लें	काफ़िर हुए	उन लोगों के लिए जो	मगर (सिर्फ़) आज़माइश

وَيَزْدَادَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِيْمَانًا وَّلَا يَرْتَابَ الَّذِيْنَ

वह लोग जिन्हें	और शक न करें	ईमान	जो लोग ईमान लाए	और ज़ियादा हो

اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۙ وَلِيَقُوْلَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ

रोग	जिन के दिलों में	वह लोग	और ताकि वह कहें	और मोमिन (जमा)	किताब दी गई

وَّالْكٰفِرُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۭ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ

अल्लाह गुमराह करता है	इसी तरह	मिसाल	इस	इरादा किया अल्लाह ने	क्या	और काफ़िर (जमा)

مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَمَا يَعْلَمُ جُنُوْدَ

लशकरों	और नहीं जानता	जिसे वह चाहता है	और हिदायत देता है	जिसे वह चाहता है

رَبِّكَ اِلَّا هُوَ ۭ وَمَا هِيَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْبَشَرِ ۝٣١ كَلَّا وَالْقَمَرِ ۝٣٢ ع ١ ٣١ ١٥

32	क़सम है चाँद की	नहीं नहीं	31	आदमी के लिए	मगर नसीहत	और नहीं यह	सिवाए वह (ख़ुद)	तेरे रब के

وَالَّيْلِ اِذْ اَدْبَرَ ۝٣٣ وَالصُّبْحِ اِذَآ اَسْفَرَ ۝٣٤ اِنَّهَا لَاِحْدَى

एक है	बेशक यह	34	जब वह रोशन हो	और सुबह	33	जब वह पीठ फेरे	और रात

الْكُبَرِ ۝٣٥ نَذِيْرًا لِّلْبَشَرِ ۝٣٦ لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّتَقَدَّمَ

कि वह आगे बढ़े	तुम में से	और जो कोई चाहे	36	लोगों को	डराने वाली	35	बड़ी (आफ़त)

اَوْ يَتَاَخَّرَ ۝٣٧ كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ ۝٣٨ اِلَّآ

मगर	38	गिरवी	उस ने कमाया (आमाल)	उस के बदले जो	हर शख़्स	37	या पीछे रहे

اَصْحٰبَ الْيَمِيْنِ ۝٣٩ فِيْ جَنّٰتٍ ۛ يَتَسَآءَلُوْنَ ۝٤٠ عَنِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝٤١

41	गुनाहगारों	से	40	वह पूछेंगे	बाग़ात में	39	दाहिनी तरफ़ वाले

مَا سَلَكَكُمْ فِيْ سَقَرَ ۝٤٢ قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ۝٤٣

43	नमाज़ पढ़ने वाले	से	हम न थे	वह कहेंगे	42	जहन्नम में	क्या (चीज़) तुम्हें ले गई

وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ ۝٤٤ وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَاۗىِٕضِيْنَ ۝٤٥

45	बेहूदा बातों के साथ लगे रहने वाले	और हम धंसते रहते थे (बेहूदा बातों में)	44	मोहताजों	हम खाना खिलाते	और न थे हम

وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۝٤٦ حَتّٰٓى اَتٰىنَا الْيَقِيْنُ ۝٤٧ فَمَا تَنْفَعُهُمْ

और उन्हें नफ़ा न दिया	47	मौत	हमें आ गई	यहां तक कि	46	रोज़े जज़ा ओ सज़ा को	और हम झुटलाते थे

شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ ۝٤٨ فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ ۝٤٩

49	मुँह फेरते हैं	नसीहत	से	तो उन्हें क्या हुआ	48	सिफ़रिश करने वाले	सिफ़ारिश

और हम ने दोज़ख़ के दारोग़े सिर्फ़ फ़रिश्ते बनाए हैं, और हम ने उन की तादाद सिर्फ़ एक फ़ित्ना बनाया उन लोगों के लिए जो काफ़िर हुए ताकि अहले किताब यक़ीन कर लें और ईमान ज़ियादा हो उन का जो ईमान लाए और वह लोग शक न करें जिन्हें किताब दी गई (अहले किताब) और मोमिन, और ताकि वह लोग जिन के दिलों में रोग है और काफ़िर कहें कि क्या इरादा किया है अल्लाह ने इस मिसाल (बात) से? इसी तरह अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह करता है और वह जिसे चाहता है हिदायत देता है, (कोई) नहीं जानता तेरे रब के लशकरों को ख़ुद उस के सिवा, और यह नहीं मगर आदमी के लिए नसीहत। (31)

नहीं नहीं! क़सम है चाँद की, (32)

और रात की जब वह पीठ फेरे। (33)

और सुब्ह की जब वह रोशन हो। (34)

बेशक वह (दोज़ख़) बड़ी चीज़ों में एक है, (35)

लोगों को डराने वाली। (36)

तुम में से जो कोई चाहे आगे बढ़े या वह पीछे रहे। (37)

हर शख़्स अपने आमाल के बदले गिरवी है। (38)

मगर दाहिनी हाथ वाले (नेक लोग)। (39)

बाग़ात में (होंगे), वह पूछेंगे। (40)

गुनाहगारों से, (41)

तुम्हें जहन्नम में क्या चीज़ ले गई? (42)

वह कहेंगे कि हम नमाज़ पढ़ने वालों में से न थे। (43)

और हम मोहताजों को खाना न खिलाते थे। (44)

और हम बेहूदा बातों में लगे रहने वालों के साथ बेहूदा बातों में धंसते रहते थे, (45)

और हम रोज़े जज़ा ओ सज़ा को झुटलाते थे। (46)

यहां तक कि हमें मौत आ गई। (47)

सो उन्हें सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश ने नफ़ा न दिया। (48)

तो उन्हें क्या हुआ कि वह नसीहत से मुँह फेरते हैं? (49)

عند المتقدمين ١٢ مع ١٦

كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ﴿٥٠﴾ فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ﴿٥١﴾ بَلْ يُرِيْدُ

चाहता है	बल्कि	51	शेर से	भागे जाते हैं	50	भागे हुए	गधे	गोया कि वह

كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ﴿٥٢﴾ كَلَّا بَلْ

बल्कि	हरगिज़ नहीं	52	खुले हुए	सहीफ़े	कि वह दिए जाएं	उन में से	हर आदमी

لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ ﴿٥٣﴾ كَلَّآ اِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ ﴿٥٤﴾ فَمَنْ شَآءَ

सो जो चाहे	54	नसीहत	बेशक यह	हरगिज़ नहीं	53	आख़िरत	वह नहीं डरते

ذَكَرَهٗ ﴿٥٥﴾ وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ هُوَ

वही	अल्लाह चाहे	मगर यह कि	और वह याद न रखेंगे	55	इसे याद रखे

ع ٢٥ ٢ ١٦ القيٰمة

اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ﴿٥٦﴾

	56	और मग़्फ़िरत करने के लाइक़	डरने के लाइक़	

آيَاتُهَا ٤٠ ❀ سُوْرَةُ الْقِيٰمَةِ (٧٥) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2 — (75) सूरतुल क़ियामह क़ियामत — आयात 40

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

لَآ اُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ﴿١﴾ وَلَآ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ﴿٢﴾

2	मलामत करने वाला (ज़मीर)	नफ़्स की	और नहीं, मैं क़सम खाता हूँ	1	क़ियामत के दिन की	नहीं, मैं क़सम खाता हूँ

اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ ﴿٣﴾ بَلٰى قٰدِرِيْنَ

क्यों नहीं, हम क़ादिर हैं	3	उस की हड्डियां	कि हम जमा न कर सकेंगे	इन्सान	क्या गुमान करता है

عَلٰٓى اَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَهٗ ﴿٤﴾ بَلْ يُرِيْدُ الْاِنْسَانُ لِيَفْجُرَ

कि गुनाह करता रहे	इन्सान	बल्कि चाहता है	4	उस के पोर पोर	कि हम दुरुस्त करें	पर

اَمَامَهٗ ﴿٥﴾ يَسْـَٔلُ اَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ ﴿٦﴾ فَاِذَا

पस जब	6	रोज़े क़ियामत	कब?	और पूछता है	5	अपने आगे को भी

بَرِقَ الْبَصَرُ ﴿٧﴾ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ﴿٨﴾ وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ﴿٩﴾

9	सूरज और चाँद	और जमा कर दिए जाएंगे	8	चाँद	और गरहन लग जाएगा	7	चुंधिया जाएंगी आँखें

يَقُوْلُ الْاِنْسَانُ يَوْمَىِٕذٍ اَيْنَ الْمَفَرُّ ﴿١٠﴾ كَلَّا لَا وَزَرَ ﴿١١﴾

11	नहीं कोई बचाओ	हरगिज़ नहीं	10	कहां भागने की जगह	आज के दिन	इन्सान	कहेगा

اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَىِٕذِ ۨالْمُسْتَقَرُّ ﴿١٢﴾ يُنَبَّؤُا الْاِنْسَانُ يَوْمَىِٕذٍ

आज के दिन	इन्सान	वह जतला दिया जाएगा	12	ठिकाना	आज के दिन	तेरे रब की तरफ़

بِمَا قَدَّمَ وَاَخَّرَ ﴿١٣﴾ بَلِ الْاِنْسَانُ عَلٰى نَفْسِهٖ بَصِيْرَةٌ ﴿١٤﴾

14	बाख़बर	अपनी जान (हालत) पर	बल्कि इन्सान	13	और उस ने पीछे छोड़ा	वह जो उस ने आगे भेजा

गोया कि वह जंगली गधे हैं, (50) भागे जाते हैं शेर से। (51) बल्कि उन में से हर आदमी चाहता है कि उसे दिए जाएं सहीफ़े खुले हुए। (52) हरगिज़ नहीं, बल्कि वह आख़िरत से नहीं डरते। (53) हरगिज़ नहीं, बेशक यह नसीहत है। (54) सो जो चाहे इसे याद रखे। (55) और वह याद न रखेंगे मगर यह कि अल्लाह चाहे, वही है डरने के लाइक़ और मग़्फ़िरत करने के लाइक़। (56)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

मैं क़ियामत के दिन की क़सम खाता हूँ। (1) और अपने ऊपर मलामत करने वाले नफ़्स की क़सम खाता हूँ। (2) क्या इन्सान गुमान करता है कि हम हरगिज़ जमा न कर सकेंगे उस की हड्डियां। (3) क्यों नहीं? कि हम इस पर क़ादिर हैं कि उस के पोर पोर दुरुस्त कर दें। (4) बल्कि इन्सान चाहता है कि आगे भी गुनाह करता रहे। (5) वह पूछता है कि रोज़े क़ियामत कब होगा? (6) पस जब आँखें चुंधिया जाएंगी, (7) और चाँद को गरहन लग जाएगा, (8) और सूरज और चाँद जमा कर दिए जाएंगे। (9) इन्सान कहेगा कि कहां है आज के दिन भागने की जगह? (10) हरगिज़ नहीं, कोई बचाओ की जगह नहीं। (11) आज के दिन तेरे रब की तरफ़ ठिकाना है। (12) जतला दिया जाएगा इन्सान आज के दिन जो उस ने आगे भेजा और जो उस ने पीछे छोड़ा। (13) बल्कि इन्सान अपनी जान पर बाख़बर है। (14)

وَلَوْ اَلْقٰى مَعَاذِيْرَهٗ ﴿١٥﴾ لَا تُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهٖ ﴿١٦﴾

16	कि जल्द (याद कर लें) उस को	अपनी ज़बान को	आप (स) हरकत न दें इस (कुरआन) के साथ	15	अपने उज़्र	अगरचे ला डाले

اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ وَقُرْاٰنَهٗ ﴿١٧﴾ فَاِذَا قَرَاْنٰهُ فَاتَّبِعْ

तो आप (स) पैरवी करें	पस जब हम उसे पढ़ें	17	और उस का पढ़ाना	उस का जमा करना	बेशक हम पर (हमारे ज़िम्मे)

قُرْاٰنَهٗ ﴿١٨﴾ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهٗ ﴿١٩﴾ كَلَّا بَلْ تُحِبُّوْنَ

तुम मुहब्बत रखते हो	हरगिज़ नहीं बल्कि	19	उस का बयान	फिर बेशक हम पर (हमारे ज़िम्मे)	18	उस के पढ़ने को

الْعَاجِلَةَ ﴿٢٠﴾ وَتَذَرُوْنَ الْاٰخِرَةَ ﴿٢١﴾ وُجُوْهٌ يَّوْمَىِٕذٍ نَّاضِرَةٌ ﴿٢٢﴾

22	ताज़ा (बारौनक)	उस दिन	बहुत से चेहरे	21	आख़िरत	और तुम छोड़ देते हो	20	जल्दी हासिल होने वाली चीज़

اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ﴿٢٣﴾ وَوُجُوْهٌ يَّوْمَىِٕذٍۭ بَاسِرَةٌ ﴿٢٤﴾ تَظُنُّ

ख़याल करते होंगे	24	बिगड़े हुए	उस दिन	और बहुत से चेहरे	23	देखते	अपने रब की तरफ़

اَنْ يُّفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ﴿٢٥﴾ كَلَّآ اِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ﴿٢٦﴾

26	हंसुली तक	पहुँच जाए	हाँ हाँ जब	25	कमर तोड़ने वाला	उन से किया जाएगा	कि

وَقِيْلَ مَنْ ۜ رَاقٍ ﴿٢٧﴾ وَّظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ ﴿٢٨﴾ وَالْتَفَّتِ

और लिपट जाए	28	जुदाई	और वह गुमान करे कि यह	27	कौन झाड़ फूंक करने वाला	और कहा जाए

السَّاقُ بِالسَّاقِ ﴿٢٩﴾ اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَىِٕذِ الْمَسَاقُ ﴿٣٠﴾ ع ١ ١٧

30	चलना	उस दिन	अपने रब की तरफ़	29	दूसरी पिंडली से	एक पिंडली

فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى ﴿٣١﴾ وَلٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿٣٢﴾

32	और मुँह मोड़ा	झुटलाया	और लेकिन (बल्कि)	31	और न उस ने नमाज़ पढ़ी	न उस ने तस्दीक़ की

ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ يَتَمَطّٰى ﴿٣٣﴾ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿٣٤﴾

34	पस अफ़सोस	अफ़सोस तुझ पर	33	अकड़ता	अपने घर वालों की तरफ़	फिर चला गया वह

ثُمَّ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿٣٥﴾ اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ يُّتْرَكَ

कि वह छोड़ दिया जाएगा	इनसान	क्या वह गुमान करता है?	35	फिर अफ़सोस	अफ़सोस तुझ पर	फिर

سُدًى ﴿٣٦﴾ اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ﴿٣٧﴾

37	टपकाया गया	मनी	से-का	नुत्फ़ा	क्या न था?	36	मुहमिल (यूं ही)

ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوّٰى ﴿٣٨﴾ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ

दो जोड़े (क़िस्में)	उस से	फिर बनाए	38	फिर उसे दुरुस्त कर दिया	फिर उस ने पैदा किया	जमा हुआ खून	फिर वह हुआ

الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ﴿٣٩﴾ اَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى

पर	क़ादिर	वह	क्या नहीं	39	मर्द और औरत

اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ﴿٤٠﴾ ع ٢ ١٨

40	मुर्दे (जमा)	कि वह ज़िन्दा करे

अगरचे अपने उज़्र (हीले) ला डाले (पेश करे)। (15)

आप (स) कुरआन के साथ अपनी ज़बान को हरकत न दें कि उस को जल्द याद कर लें। (16)

बेशक उस का जमा करना और उस का पढ़ाना हमारे ज़िम्मे है। (17)

पस जब हम उसे (फ़रिश्ते की ज़बानी) पढ़ें तो आप (स) ध्यान से सुनें उस के पढ़ने को। (18)

फिर बेशक उस का बयान करना हमारे ज़िम्मे है। (19)

हरगिज़ नहीं, बल्कि (ऐ काफ़िरो!) तुम दुनिया से मुहब्बत रखते हो, (20)

और आख़िरत को छोड़ देते हो। (21)

उस दिन बहुत से चेहरे बारौनक़ होंगे, (22)

अपने रब की तरफ़ देखते होंगे। (23)

और बहुत से चेहरे उस दिन बिगड़े हुए होंगे, (24)

वह ख़याल करते होंगे कि उन से कमर तोड़ने वाला (मामला) किया जाएगा। (25)

हाँ हाँ, जब (जान) हंसुली तक पहुँच जाए। (26)

और कहा जाए कि कौन है झाड़ फूंक करने वाला? (27)

और वह गुमान करे कि यह जुदाई की घड़ी है। (28)

और एक पिंडली दूसरी पिंडली से लिपट जाए (पाऊँ में हरकत न रहे)। (29)

उस दिन (तुझे) अपने रब की तरफ़ चलना है। (30)

न उस ने (अल्लाह-रसूल की) तस्दीक़ की और न उस ने नमाज़ पढ़ी। (31)

बल्कि उस ने झुटलाया और मुँह मोड़ा। (32)

फिर वह अपने घर वालों की तरफ़ अकड़ता हुआ चला गया। (33)

अफ़्सोस है तुझ पर अफ़्सोस। (34)

फिर अफ़्सोस है तुझ पर फिर अफ़्सोस। (35)

क्या इन्सान गुमान करता है कि वह यूंही छोड़ दिया जाएगा। (36)

क्या वह मनी का एक नुत्फ़ा (क़तरा) न था जो (रहमे मादर में) टपकाया गया, (37)

फिर वह जमा हुआ खून हुआ, फिर उस ने उसे पैदा किया, फिर उसे दुरुस्त (अनदाम) किया, (38)

फिर उस से मर्द और औरत की दो क़िस्में बनाईं। (39)

क्या वह इस पर क़ादिर नहीं कि मुर्दों को ज़िन्दा करे? (40)

آیَاتُهَا ٣١ ❀ سُوْرَةُ الدَّهْرِ (٧٦) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2 | (76) सूरतुद दह्र ज़माना | आयात 31

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا ﴿١﴾

1	क़ाबिले ज़िक्र	न था कुछ	ज़माना से (में)	एक वक़्त	इन्सान पर	यक़ीनन आया (गुज़रा)

اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ ۖ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ

तो हम ने उसे बनाया	हम उसे आज़माएं	मख़लूत	नुत्फ़े से	इन्सान	बेशक हम ने पैदा किया

سَمِيْعًاۢ بَصِيْرًا ﴿٢﴾ اِنَّا هَدَيْنٰهُ السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّاِمَّا

और ख़ाह	ख़ाह शुक्र करने वाला	राह	बेशक हम ने उसे दिखाई	2	सुनता देखता

كَفُوْرًا ﴿٣﴾ اِنَّاۤ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَاۡ وَاَغْلٰلًا وَّسَعِيْرًا ﴿٤﴾

4	और दहकती आग	और तौक़	ज़न्जीरें	काफ़िरों के लिए	बेशक हम ने तैयार किया	3	नाशुक्रा

اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ﴿٥﴾

5	काफ़ूर की	उस में मिलावट होगी	प्याले से	पिएंगे	नेक बन्दे	बेशक

عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ﴿٦﴾ يُوْفُوْنَ

वह पूरी करते हैं	6	नालियां	उस से जारी करते हैं	अल्लाह के बन्दे	उस से पीते हैं	एक चश्मा

بِالنَّذْرِ وَيَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا ﴿٧﴾ وَيُطْعِمُوْنَ

और वह खिलाते हैं	7	फैली हुई	उस की बुराई	होगी	उस दिन से	और वह डरते हैं	अपनी (नज़्रें)

الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا ﴿٨﴾ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ

हम तुम्हें खिलाते हैं	इस के सिवा नहीं	8	और क़ैदी	और यतीम	मिस्कीन	उस की मुहब्बत पर	खाना

لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا ﴿٩﴾ اِنَّا نَخَافُ

बेशक हम डरते हैं	9	और न शुक्रिया	कोई जज़ा	तुम से	हम नहीं चाहते	रज़ाए इलाही के लिए

مِنْ رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوْسًا قَمْطَرِيْرًا ﴿١٠﴾ فَوَقٰهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ

उस दिन	बुराई	पस उन्हें बचा लिया अल्लाह ने	10	निहायत सख़्त	मुँह बिगाड़ने वाला	दिन	अपने रब से

وَلَقّٰهُمْ نَضْرَةً وَّسُرُوْرًا ﴿١١﴾ وَجَزٰهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ﴿١٢﴾

12	और रेशमी लिबास	जन्नत	उन के सब्र पर	और उन्हें बदला दिया	11	और ख़ुश दिली	ताज़गी	और उन्हें अ़ता की

مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ۚ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ﴿١٣﴾

13	और न सर्दी	धूप	उस में	वह न देखेंगे	तख़्तों पर	उस में	तकिया लगाए होंगे

وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ﴿١٤﴾

14	झुका कर	उस के गुच्छे	और नज़्दीक कर दिए गए होंगे	उन के साए	उन पर	और नज़्दीक हो रहे होंगे

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

यक़ीनन इन्सान पर ज़माने में एक ऐसा वक़्त गुज़रा है कि वह कुछ (भी) क़ाबिले ज़िक्र न था। (1) बेशक हम ने इन्सान को पैदा किया मख़लूत नुत्फ़े से (कि) हम उसे आज़माएं तो हम ने उसे सुनता देखता बनाया। (2) बेशक हम ने उसे राह दिखाई (अब वह) ख़ाह शुक्र करने वाला बने ख़ाह नाशुक्रा। (3) बेशक हम ने काफ़िरों (नाशुक्रों) के लिए ज़न्जीरें और तौक़ और दहकती आग तैयार कर रखी है। (4) बेशक पिएंगे नेक बन्दे प्याले से (वह मशरूब) जिस में काफ़ूर की मिलावट होगी। (5) एक चश्मा जिस से अल्लाह के बन्दे पीते हैं, उस से नालियां जारी करते हैं। (6) वह पूरी करते हैं अपनी नज़्रें और वह उस दिन से डरते हैं जिस की बुराई फैली (आ़म) होगी। (7) और वह उस की मुहब्बत पर खाना खिलाते हैं मोहताज को, और यतीम और क़ैदी को। (8) (और कहते हैं) इस के सिवा नहीं कि हम तुम्हें रज़ाए इलाही के लिए खिलाते हैं। हम तुम से न जज़ा चाहते हैं और न शुक्रिया। (9) बेशक हम डरते हैं अपने रब की तरफ़ से एक दिन जो मुँह बिगाड़ने वाला निहायत सख़्त है। (10) पस अल्लाह ने उन्हें उस दिन की बुराई से बचा लिया और उन्हें ताज़गी अ़ता की और ख़ुश दिली। (11) और उन्हें बदला दिया उन के सब्र पर जन्नत और रेशमी लिबास। (12) उस में तख़्तों पर तकिया लगाए हुए होंगे, वह न देखेंगे उस में धूप (की तेज़ी) न सर्दी (की शिद्दत)। (13) उन पर उस के साए नज़्दीक हो रहे होंगे और उस के गुच्छे झुका कर नज़्दीक कर दिए गए होंगे। (14)

قرأ حفص بغير الالف في الوصل فيهما - ووقف على الاول بالالف وعلى الثاني بغير الالف ١٢

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّاَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَا۠ ﴿١٥﴾

15	शीशे के	होंगे	और प्याले	चाँदी के	बरतनों का	उन पर	और दौर होगा

قَوَارِيْرَا۠ مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا تَقْدِيْرًا ﴿١٦﴾ وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا

ऐसा जाम	उस में	और उन्हें पिलाया जाएगा	16	मुनासिब अन्दाज़ा	उन्हों ने उन का अन्दाज़ा किया होगा	चाँदी के	शीशे

كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا ﴿١٧﴾ عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ﴿١٨﴾ وَيَطُوْفُ

और गर्दिश करेंगे	18	सल्सबील	नाम होगा जिस का	एक चश्मा उस में	17	अदरक	उस की मिलावट	होगी

عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ اِذَا رَاَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا

मोती	तू उन्हें समझे	जब तू उन्हें देखे	हमेशा (नौ उम्र) रहने वाले	लड़के	उन पर

مَّنْثُوْرًا ﴿١٩﴾ وَاِذَا رَاَيْتَ ثَمَّ رَاَيْتَ نَعِيْمًا وَّمُلْكًا كَبِيْرًا ﴿٢٠﴾

20	और बड़ी सल्तनत	बड़ी नेमत	तू देखेगा	वहां	और जब तू देखेगा	19	बिखरे हुए

عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَّاِسْتَبْرَقٌ وَّحُلُّوْٓا اَسَاوِرَ

कंगन	और उन्हें पहनाए जाएंगे	और दबीज़ रेशम (अतलस)	सब्ज़	बारीक रेशम	उन के ऊपर की पोशाक

مِنْ فِضَّةٍ وَسَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ﴿٢١﴾ اِنَّ هٰذَا كَانَ

है	बेशक यह	21	नियाहत पाक	एक शराब (मशरूब)	उन का रब	और उन्हें पिलाएगा	चाँदी के

لَكُمْ جَزَآءً وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿٢٢﴾ اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ ع ٢٢ ١٩

आप (स) पर	हम ने नाज़िल किया	बेशक हम	22	मशकूर (मक़बूल)	तुम्हारी कोशिश	और हुई	जज़ा	तुम्हारे लिए

الْقُرْاٰنَ تَنْزِيْلًا ﴿٢٣﴾ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ اٰثِمًا

किसी गुनाहगार	उन में से	और आप (स) कहा न मानें	अपने रब के हुक्म के लिए	पस सब्र करें	23	बतदरीज	कुरआन

اَوْ كَفُوْرًا ﴿٢٤﴾ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٢٥﴾ وَمِنَ الَّيْلِ

और रात के (किसी हिस्से में)	25	और शाम	सुबह	अपने रब का नाम	और आप (स) ज़िक्र करें	24	या नाशुक्रे का

فَاسْجُدْ لَهٗ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيْلًا ﴿٢٦﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ يُحِبُّوْنَ

मुहब्बत रखते हैं	बेशक यह (मुन्किर) लोग	26	और उस की पाकीज़गी बयान करें रात का बड़ा हिस्सा	उस को	पस आप (स) सिज्दा करें

الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُوْنَ وَرَآءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيْلًا ﴿٢٧﴾ نَحْنُ خَلَقْنٰهُمْ

हम ने उन्हें पैदा किया	27	भारी	एक दिन	अपने पीछे	और छोड़ देते हैं	दुनिया

وَشَدَدْنَآ اَسْرَهُمْ وَاِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَآ اَمْثَالَهُمْ تَبْدِيْلًا ﴿٢٨﴾

28	बदल कर	उन जैसे लोग	हम बदल दें	और जब हम चाहें	उन के जोड़	और हम ने मज़बूत किए

اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿٢٩﴾

29	राह	अपने रब की तरफ़	इख़्तियार करे	पस जो चाहे	नसीहत	बेशक यह

وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٣٠﴾

30	हिक्मत वाला	जानने वाला	है	बेशक अल्लाह	अल्लाह चाहे	जो	सिवाए	और तुम नहीं चाहोगे

और उन पर दौर होगा चाँदी के बरतनों का और शीशे के प्याले होंगे, (15) शीशे चाँदी के। (साक़ियों ने) उन का मुनासिब अन्दाज़ा किया होगा। (16) और उन्हें उस में ऐसा जाम पिलाया जाएगा जिस में अदरक की मिलावट होगी। (17) उस में एक चश्मा है जिस का नाम सल्सबील है। (18) और गर्दिश करेंगे उन पर हमेशा नौउम्र रहने वाले लड़के, जब तू उन्हें देखे तो उन्हें बिखरे हुए मोती समझे। (19) और जब तू देखेगा तो वहां (जन्नत में) बड़ी नेमत और बड़ी सल्तनत देखेगा। (20) उन के ऊपर की पोशाक सब्ज़ बारीक रेशम और अतलस की होगी और उन्हें कंगन पहनाए जाएंगे चाँदी के और उन का रब उन्हें निहायत पाक एक मशरूब पिलाएगा। (21) बेशक यह तुम्हारी जज़ा है, और तुम्हारी कोशिश मक़्बूल हुई। (22) बेशक हम ने आप (स) पर कुरआन थोड़ा थोड़ा करके नाज़िल किया। (23) पस आप (स) अपने रब के हुक्म के लिए सब्र करें, और आप (स) कहा ना मानें उन में से किसी गुनाहगार नाशुक्रे का। (24) और आप (स) अपने रब का नाम सुबह ओ शाम याद करते रहें। (25) और रात के किसी हिस्से में आप (स) उस को सिज्दा करें और उस की पाकीज़गी बयान करें रात के बड़े हिस्से में। (26) बेशक यह मुन्किर दुनिया से मुहब्बत रखते हैं और एक भारी दिन (रोज़े क़ियामत को) अपने पीछे (पसे पुश्त) छोड़ देते हैं। (27) हम ने उन्हें पैदा किया और हम ने उन के जोड़ मज़बूत किए, और हम जब चाहें (उन की जगह) उन जैसे और लोग बदल कर ले आएं। (28) बेशक यह नसीहत है, पस जो चाहे अपने रब की तरफ़ राह इख़्तियार कर ले। (29) और तुम नहीं चाहोगे सिवाए जो अल्लाह चाहे, बेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (30)

ع ٢ ٩ ٢٠

يُدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِىْ رَحْمَتِهٖ ؕ وَالظّٰلِمِيْنَ اَعَدَّ لَهُمْ

उस ने तैयार किया है उन के लिए	और (रहे) ज़ालिम	अपनी रहमत में	वह जिसे चाहे	वह दाख़िल करता है

عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٣١﴾

	31	दर्दनाक अ़ज़ाब	

آيَاتُهَا ٥٠ ❀ سُوْرَةُ الْمُرْسَلٰتِ (٧٧) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकुआ़त 2 — (77) सूरतुल मुर्सलात — आयात 50

भेजी जाने वालियाँ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ﴿١﴾ فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ﴿٢﴾ وَّالنّٰشِرٰتِ

बादल उठा कर लाने वाली हवाओं की क़सम	2	शिद्दत से	फिर तुन्द ओ तेज़ चलने वाली हवाओं की क़सम	1	दिल ख़ुश करने वाली	हवाओं की क़सम

نَشْرًا ﴿٣﴾ فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ﴿٤﴾ فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ﴿٥﴾ عُذْرًا

हुज्जत तमाम करने को	5	ज़िक्र (दिलों में अल्लाह की याद)	फिर डालने वाली हवाओं की क़सम	4	बांट कर	फिर फाड़ने वाली हवाओं की क़सम	3	फैलाने वाली

اَوْ نُذْرًا ﴿٦﴾ اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ﴿٧﴾ فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ﴿٨﴾

8	सितारे मिटाए जाएं (बेनूर हो जाएं)	पस जब	7	ज़रूर होने वाला	तुम्हें वादा दिया जाता है	बेशक जो	6	या डराने को

وَاِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ ﴿٩﴾ وَاِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ﴿١٠﴾ وَاِذَا الرُّسُلُ

और जब रसूल (जमा)	10	उड़ते फिरें	और जब पहाड़	9	फट जाए	और जब आस्मान

اُقِّتَتْ ﴿١١﴾ لِاَيِّ يَوْمٍ اُجِّلَتْ ﴿١٢﴾ لِيَوْمِ الْفَصْلِ ﴿١٣﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ

और तुम क्या समझे?	13	फ़ैसले का दिन	12	मुल्तवी रखा गया है	किस दिन के लिए	11	वक़्त पर जमा किए जाएंगे

مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ﴿١٤﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٥﴾ اَلَمْ نُهْلِكِ

क्या हम ने हलाक नहीं किया?	15	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	ख़राबी	14	क्या है फ़ैसले का दिन?

الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٦﴾ ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٧﴾ كَذٰلِكَ

इसी तरह	17	पिछलों को	हम उन के पीछे चलाते हैं	फिर	16	पहले लोगों को?

نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٨﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٩﴾

19	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	ख़राबी	18	मुज्रिमों के साथ	हम करते हैं

اَلَمْ نَخْلُقْكُّمْ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ﴿٢٠﴾ فَجَعَلْنٰهُ فِىْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ﴿٢١﴾

21	एक महफ़ूज़ जगह	में	फिर हम ने उसे रखा	20	हक़ीर	पानी से	क्या हम ने नहीं पैदा किया तुम्हें

اِلٰى قَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٢٢﴾ فَقَدَرْنَا ۖ فَنِعْمَ الْقٰدِرُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَيْلٌ

ख़राबी	23	अन्दाज़ा करने वाले	तो कैसा अच्छा	फिर हम ने अन्दाज़ा किया	22	उस क़द्र जो मालूम है	तक

يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٤﴾ اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ كِفَاتًا ﴿٢٥﴾

25	समेटने वाली	ज़मीन	क्या हम ने नहीं बनाया	24	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन

वह जिसे चाहे अपनी रहमत में दाख़िल करता है, और रहे ज़ालिम तो उन के लिए उस ने दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार किया है। (31)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

दिल ख़ुश करने वाली हवाओं की क़सम, (1)
फिर शिद्दत से तुन्द ओ तेज़ चलने वाली हवाओं की क़सम, (2)
बादलों को उठा कर लाने वाली फैलाने वाली हवाओं की क़सम, (3)
फिर बांट कर फाड़ने वाली हवाओं की क़सम, (4)
फिर (दिलों में अल्लाह की) याद डालने वाली हवाओं की क़सम। (5)
हुज्जत तमाम करने को या डराने को। (6)
बेशक जो तुम्हें वादा दिया जाता है वह ज़रूर वाक़े होने वाला है। (7)
फिर जब सितारे बेनूर हो जाएं। (8)
और जब आस्मान फट जाए। (9)
और जब पहाड़ उड़ते फिरें (पारा पारा हो कर)। (10)
और जब सारे रसूल वक़्ते (मुअ़य्यन) पर जमा किए जाएं। (11)
(उन का मामला) किस दिन के लिए मुल्तवी रखा गया है? (12)
फ़ैसले के दिन के लिए। (13)
और तुम क्या समझे कि फ़ैसले का दिन क्या है? (14)
उस दिन ख़राबी है झुटलाने वालों के लिए। (15)
क्या हम ने हलाक नहीं किया पहले लोगों को? (16)
फिर पिछलों को उन के पीछे चलाते हैं। (17)
इसी तरह हम मुज्रिमों के साथ करते हैं। (18)
उस दिन ख़राबी है झुटलाने वालों के लिए। (19)
क्या हम ने तुम्हें हक़ीर पानी से नहीं पैदा किया? (20)
फिर हम ने उसे एक महफ़ूज़ जगह में रखा, (21)
एक वक़्ते मुअ़य्यन तक। (22)
फिर हम ने अन्दाज़ा किया तो (हम) कैसा अच्छा अन्दाज़ा करने वाले हैं। (23)
उस दिन ख़राबी है झुटलाने वालों के लिए। (24)
क्या हम ने ज़मीन को समेटने वाली नहीं बनाया? (25)

ज़िन्दों को और मुर्दों को। (26)
और हम ने उस में ऊँचे ऊँचे पहाड़ रखे और हम ने तुम्हें मीठा पानी पिलाया। (27)
ख़राबी है उस दिन झुटलाने वालों के लिए। (28)
(हुक्म होगा) तुम चलो उस की तरफ़ जिस को तुम झुटलाते थे। (29)
तुम चलो तीन शाख़ों वाले साए की तरफ़। (30)
न गहरा साया और न वह तपिश से बचाए। (31)
बेशक वह महल जैसे (ऊँचे) शोले फेंकती है, (32)
गोया कि वह ऊँट हैं ज़र्द। (33)
ख़राबी है उस दिन झुटलाने वालों के लिए। (34)
उस दिन न वह बोल सकेंगे, (35)
और न उन्हें इजाज़त दी जाएगी कि वह उज़्र ख़ाही करें। (36)
ख़राबी है उस दिन झुटलाने वालों के लिए। (37)
यह फ़ैसले का दिन है, हम ने तुम्हें जमा किया और पहले लोगों को। (38)
फिर अगर तुम्हारे पास कोई दाओ है तो मुझ पर दाओ करो। (39)
ख़राबी है उस दिन झुटलाने वालों के लिए। (40)
बेशक परहेज़गार सायों और चश्मों में होंगे। (41)
और मेवों में जो वह चाहेंगे। (42)
(हम फ़रमाएंगे) तुम खाओ और पियो मज़े से (बाफ़राग़त) उस के बदले जो तुम करते थे। (43)
बेशक हम इसी तरह नेकोकारों को जज़ा देते हैं। (44)
ख़राबी है उस दिन झुटलाने वालों के लिए। (45)
तुम खाओ और फ़ाइदा उठा लो थोड़ा (किसी क़द्र) बेशक तुम मुज्‍रिम हो। (46)
ख़राबी है उस दिन झुटलाने वालों के लिए। (47)
और जब उन से कहा जाता है कि तुम रुकूअ़ करो तो वह रुकूअ़ नहीं करते। (48)
ख़राबी है उस दिन झुटलाने वालों के लिए। (49)
तो इस के बाद वह कौन सी बात पर ईमान लाएंगे? (50)

اَحْيَآءً وَّاَمْوَاتًا ﴿٢٦﴾ وَّجَعَلْنَا فِيْهَا رَوَاسِىَ شٰمِخٰتٍ

ऊँचे ऊँचे	पहाड़ (जमा)	उस में	और हम ने रखे	26	और मुर्दों को	ज़िन्दों को

وَّاَسْقَيْنٰكُمْ مَّآءً فُرَاتًا ﴿٢٧﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٨﴾

28	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	ख़राबी	27	पानी मीठा	और हम ने पिलाया तुम्हें

اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى مَا كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٢٩﴾ اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى ظِلٍّ

साए की तरफ़	तुम चलो	29	तुम झुटलाते	जिस को तुम थे	तरफ़	तो तुम चलो

ذِىْ ثَلٰثِ شُعَبٍ ﴿٣٠﴾ لَّا ظَلِيْلٍ وَّلَا يُغْنِىْ مِنَ اللَّهَبِ ﴿٣١﴾

31	शोला (तपिश)	से	और न वह बचाए	न गहरा साया	30	शाख़ें	तीन	वाला

اِنَّهَا تَرْمِىْ بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ﴿٣٢﴾ كَاَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ ﴿٣٣﴾ وَيْلٌ

ख़राबी	33	ज़र्द	ऊँट (जमा)	गोया कि	32	महल जैसे	शोले	फेंकती	बेशक वह

يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٤﴾ هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَلَا يُؤْذَنُ

और न इजाज़त दी जाएगी	35	वह न बोल सकेंगे	उस दिन	34	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन

لَهُمْ فَيَعْتَذِرُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٧﴾

37	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	ख़राबी	36	कि वह उज़्र ख़ाही करें	उन्हें

هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ جَمَعْنٰكُمْ وَالْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٨﴾ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ

है तुम्हारे पास	फिर अगर	38	और पहले लोगों को	हम ने जमा किया तुम्हें	फ़ैसले का दिन	यह

كَيْدٌ فَكِيْدُوْنِ ﴿٣٩﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٠﴾ ع ١ ٢١

40	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	ख़राबी	39	तो तुम मुझ पर दाओ कर लो	कोई दाओ

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِىْ ظِلٰلٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٤١﴾ وَّفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٤٢﴾

42	वह चाहेंगे	जो	और मेवे	41	और चश्मों	सायों	में	बेशक परहेज़गार (जमा)

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓئًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٤٣﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ

बेशक हम इसी तरह	43	करते थे	उस के बदले जो तुम	मज़े से	औत तुम पियो	तुम खाओ

نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٥﴾ كُلُوْا

तुम खाओ	45	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	ख़राबी	44	नेकोकारों को	जज़ा देते हैं

وَتَمَتَّعُوْا قَلِيْلًا اِنَّكُمْ مُّجْرِمُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ

उस दिन	ख़राबी	46	मुज्‍रिम (जमा)	बेशक तुम	थोड़ा	और तुम फ़ाइदा उठाओ

لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ ارْكَعُوْا لَا يَرْكَعُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَيْلٌ

ख़राबी	48	वह रुकूअ़ नहीं करते	तुम रुकूअ़ करो	उन से	कहा जाए	और जब	47	झुटलाने वालों के लिए

يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٩﴾ فَبِاَىِّ حَدِيْثٍۢ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٠﴾ ع ٢ ٢٢

50	वह ईमान लाएंगे	इस के बाद	बात	तो कौन सी	49	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन